॥ श्री सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥

Scanned with CamScanner

❀ "नम्र निवेदन" ❀

प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद श्री महाराज जी एवं आनन्द कन्द भगवान श्री लक्ष्मीनारायण जी की असीम कृपा से तथा समस्त भगवत् प्रेमियों के शुभ संकल्प से "अनन्त श्री विभूषित श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज बम्बई वाले का संक्षिप्त, सुन्दर एवं सदुपदेश पूर्ण जीवन परिचय, एवं परम पावन लीलाओं का संग्रह आप सब की सेवा में सादर समर्पित कर रहा हूँ।

बहुत दिनों से स्वामी जी के भक्तों की लालसा रही कि श्री महाराज जी का जीवन परिचय लिखा जाय, पर प्रश्न यह था कि सूर्य भगवान को दीपक कौन दिखाए? सन्तों, महात्माओं एवं महापुरुषों का जीवन तो साक्षात् भगवान का अवतार होता है। साधारण श्रेणी के हमारे जैसे जीव न तो उसे पूरा पूरा समझ ही सकते हैं। न तो उसे अभिव्यक्ति देने के लिए पर्य्याप्त एवं उपयुक्त शब्द-सम्पत्ति ही रखते हैं।

फिर भी ईश्वर ने जो कुछ बुद्धि दी है, स्वामी जी, की भक्ति से जो प्रेरणा मिली है, उसके अनुसार मैंने 'अखिलभारतीय श्री राधाकृष्ण संकीर्तन मंडल धर्मनगर, बिलवार, जौनपुर के अनुरोध पर लिखने का प्रयत्न किया है। इसमें मुझे कितनी सफलता मिलती है, यह तो प्रभु ही जानें। जैसा बना, यह श्री श्री गुरुदेव जी के भक्त जनों के

Scanned with CamScanner

पावन संकल्प का श्रद्धामय पुष्पहार उन्हीं के परम पुनीत पाद पद्मों में समर्पित करता हूँ। करुणासिंधु दीनबंधु इस नगण्य भेंट से प्रसन्न होकर अपने चरणारविन्द की निष्काम प्रीति प्रदान करेंगे-इसी आशा के साथ.....

विनीत
गायत्रीप्रसाद

Scanned with CamScanner

"प्रार्थना"

गजानं भूत गणादि सेवितं,
कपित्थ जम्बू फल चारु भक्षणम्
उमासुतं शोक विनाशकारकं,
नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम् ।
जेहि सुमिरत सिधि होइ,
गणनायक करिवर बदन,
करहु अनुग्रह सोइ,
बुद्धि राशि शुभ गुण सदन ।
बंदउं पवन कुमार,
खल बन पावक ज्ञान घन,
जासु हृदय आगार,
बसहिं राम सर-चाप धर ।

वंदउँ गुरु पद पदुम परागा,
सुरुचि सुवास सरस अनुरागा ।

सीय राम मय सब जगजानी,
करउँ प्रणाम जोरि जुग पानी ।।

Scanned with CamScanner

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

संकीर्तनाचार्य

श्री १०८ श्री स्वामी कृष्णा नन्द जी महाराज

बम्बई वाले का

संक्षिप्त जोवन चरित्र

मतिदं सकलं, मतिदं विमलं,
सवितारमजं, निगमागमगम् ।
अनघं, भगवन्तमनादि गुरुम्,
प्रणिपत्य नमामि, नमाम्यहकम् ॥

जन्म एवं माता-पिता

भगवान राम की लीला भूमि अयोध्या, विश्वनाथ पुरी काशी एवं तीर्थराज प्रयाग के मध्य में स्थित जौनपुर जिलान्तरगत एक पवित्र ब्राह्मण कुल में 'सम्वत् १९४६ में अगहन सुदी पूर्णिमां के दिन आप का जन्म हुआ । आप के पिता का नाम पंडित बेंणी माधव पाण्डेय तथा माता का नाम सीता देवी था । सीता देवी एक आदर्श प्रतिव्रता, धैर्यवती एवं अत्यन्त सहिष्णु नारी थीं । आप के पिता "वेंणीमाधव पाण्डेय निर्धन पर महान साहसी, आत्मविश्वासी, शेषशायी भगवान श्री

Scanned with CamScanner

लक्ष्मी- नारायण जी के अनन्य उपासक एवं स्वामी श्री रामानुजाचार्य सम्प्रदाय से दीक्षित परम वैष्णव थे। प्रति दिन प्रातः एवं सायंकाल भगवान श्री शालिग्राम का पूजन बड़ी निष्ठा के साथ करते थे। उनकी ऐसी भक्ति-भावना देखकर लोग उन्हे पंडित जी कहने लगे। थोड़ी सी कृषि भूमि में कृषि करते एवं यजमानी करते हुए अपना गुजर करते थे घर की दीनता असह्य होने के कारण इनके छोटे भाई माता प्रसाद पाण्डेय अकोला जाकर पुलिस विभाग में भर्ती हो गए। पंडित बेंणी माधव एवं सीता देवी एक ओर जहाँ निर्धनता के शाप से पीड़ित थे, वहीं दूसरी ओर कोई सन्तान न होने का मानसिक दुःख उन्हें सता रहा था।

बिलवार ग्राम में एक ही खानदान के लगभग सौ घर ब्राह्मण आज भी विद्यमान हैं। सीता देवी को निर्धन एवं सन्तान हीन समझ कर पास पड़ोस की देवरानी, जेठानी स्त्रियाँ प्रायः यह कहा करतीं कि यह दरिद्र एवं जन्म वन्ध्या कहाँ से इस खान-दान में आई। एक दिन किसी पड़ोसिन ने यहाँ तक कह दिया कि कल प्रातः काल मैंने एक बाँझ का मुँह देख लिया था, सारा दिन अन्न नहीं मिला, "सब से कठिन जाति अपमाना"। स्त्रियों के व्यंग वाक्यसुन कर सीतादेवी मानसिक ग्लानि से दुखी होकर चुप चाप रोतीं। आँसू बहाने के अतिरिक्त वे कर ही क्या सकती थीं ?

कहते हैं कि भगवान गरीब की हाय को अधिक दिनों तक नहीं सहन कर सकते। एक दिन श्री स्वामी रामानुजाचार्य सम्प्रदाय के दो सन्त श्री अयोध्या पुरी से पद यात्रा

Scanned with CamScanner

करते हुए तीर्थराज प्रयाग जा रहे थे। विलवार पहुँचते ही सन्ध्या वेला हो चुकी थी। मस्तक पर बड़े ही सुन्दर द्वादश तिलक लगे थे। दोनों साधु गांव में रुक गए। भूखे थे अतः ग्रामवासियों से इच्छा प्रगट की कि हम लोगों को थोड़ा आटा, दाल मिल जाय तो भोजन बना कर भगवान को भोग दें और स्वयं भोजन करें। किसी ने पंडित बेंणीमाधव की परीक्षा लेने एवं उनकी हंसी उड़ाने के उद्देश्य से उन दोनों महात्माओं को उन्हीं के द्वार पर भेज दिया। निर्धन दम्पति विष्णु स्वरूप उन साधुओं को द्वार पर देख कर आनन्द मग्न हो गए। पंडित वेंणी माधव गाँव के जायसवाल वैश्य के घर से आटा-दाल, चावल, घी उधार ले आए। महात्माओं ने स्वयं भोजन बनाया और भगवान का भोग लगाकर प्रेम से खूब भगवान का प्रसाद ग्रहण किया। रात्रि में विश्राम करने के पश्चात् दोनों साधु चलने को उद्यत हुए। भव्य आतिथ्य सत्कार से उन्हें अपार आनन्द की प्राप्ति हो रही थी। उस समय उन्हें पंडित वेंणी माधव की निर्धनता एवं सन्तानहीनता का ज्ञान हो गया। सीता देवी को आशीर्वाद देते हुए उन्होंने कहा "बेटी तुम अपने पति से आज्ञा लेकर भगवान शंकर का प्रदोष व्रत करो। महीने में दो वार यह प्रदोष आता है। दिनभर व्रत करके सायंकाल लगभग ५ बजे स्नान करके सुन्दर पवित्र वस्त्र धारण कर थाली में गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, बेलपत्र, नैवेद्य, सिन्दूर और पवित्र पात्र में जल भर कर भगवान शंकर को स्नान करा के उनका पूजन करो। भगवान शंकर की आराधना कभी

निष्फल नहीं जाती, वे तुम्हें धन और सन्तान दोनों देंगे"। इतना कह कर वे दोनों बीतराग प्रयागराज के पथ पर बढ़ गए।

ग्राम के बाहर श्री टांड़ेश्वरनाथ महादेव का विशाल मन्दिर आज भी विद्यमान है। दोनों पति-पत्नी बड़ी ही भक्ति भावना से उसी मन्दिर में भगवान शंकर का पूजन करने लगे। कई महीनों तक गाँव की स्त्रियाँ दम्पति की इस ईश आराधना को देखती रहीं और बाद में उपहास करने का अवसर पाकर सुबह-शाम कहने लगीं कि तुम चाहे जितनी पूजा करो पर सन्तान का मुख नहीं देख सकती।

लेकिन कुछ ही दिनों पश्चात् सीता देवी के गर्भ में भगवान के अंश बालक कृष्णानन्द का प्रार्दुभाव हुआ। जिन देवरानियों और जेठानियों को उनका मुख देखने पर उनको अन्न नहीं मिलता था, उनकी भी प्रशन्नता की सीमा न रही। आस पास के गाँव के लोग भी इस समाचार से आनन्द विभोर हो उठे दूध, दही, घी अन्न, धन पहुँचाने लगे। पं० बेंणीमाधव का घर अन्न-धन से भर गया।

समय पाकर पुत्र रत्न का जन्म हुआ। आनन्दातिरेक में माता सीतादेवी अपने छोटे-मोटे आभूषणों को दान में ब्राह्मणों को दे दिया। प्रजा वर्ग की स्त्रियों को पीली २ धोतियाँ बाँटी गई। जन्म से ही बालक कृष्णानन्द के मुख पर एक ऐसी दिव्य ज्योति थी जिसकी आभा देखने वाला हर कोई आनन्द मग्न हो उठता था। आनन्द कन्द भगवान

Scanned with CamScanner

श्री कृष्ण की भाँति बालक कृष्णानन्द ने समस्त ग्राम नर-नारी का मन मोह लिया, पहले की ईर्ष्यालु नारियाँ अब सीता देवी के गोद की सराहना करने लगीं। काल विकाश के साथ बालक कृष्णानन्द भी बड़े होते गए और अपना घर छोड़ कर पड़ोसियों के घर तक आने जाने लगे। और उनके श्यामवर्ण, घुँघराली अलकें, देदीप्यमान मुख-मंडल एवं सुमधुर तोतली भाषा पर पड़ोसी जन निछावर हो जाते। पाँच वर्ष की अवस्था में ही इनमें सत्य, त्याग और आनन्दानुभूमि की झलक दिखाई देने लगी। इनके साथी जब कभी इन्हें मारते, न तो ए कभी माता सीता से बतलाते, न उनके घर वालों को उलाहना देने जाते। सीता देवी अपने पुत्र को कलूटा और शुन्ना कह कर पुकारती थीं।

Scanned with CamScanner

शिक्षा

सात वर्ष की आयु में इन्हें समीप के भुइँधरा ग्राम की प्राथमिक पाठशाला में भर्ती करा दिया गया। उस पाठशाला में एक मौलवी साहब इन्हें गुरू के रूप में मिले। उनकी लम्बी दाढ़ी देखकर ये उन्हें साधु समझने लगे। मौलवी साहब सरल स्वभाव के आदर्श शिक्षक थे, आचरण दृष्टान्त संसार की सबसे बड़ी शिक्षा है, छात्र कृष्णानन्द ने मौलवी साहब की सरलता चुपचाप ग्रहण कर ली। पाठशाला में अधिकांश ब्राह्मण छात्र थे। वे इतर जाति के बालकों से घृणा करते किन्तु कृष्णानन्द में जाति गत विकार नाम मात्र के लिये भी नहीं था। ये सभी जाति के बालकों के साथ बैठते, खेलते और पढ़ते थे। इनका ध्यान पढ़ने में कम और साथियों के साथ खेलने में अधिक रमता था। पिता की अभिलाषा थी कि मेरा बच्चा पढ़ लिखकर महान पंडित हो जाय, किन्तु घर में प्रेममयी माता के उत्तम संस्कार ने इनकी प्रवृत्ति भक्ति की ओर मोड़ दी। पिता का बाह्य दबाव-माता द्वारा डाले गए अन्तः प्रभाव को दूर नहीं कर सका। इसी मानसिक संक्रान्ति काल में बारह वर्ष की अवस्था प्राप्त होने पर चौथी कक्षा से उत्तीर्ण होकर प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त की। तदुपरान्त पिता वेंणीमाधव ने इन्हें संस्कृत पाठशाला में प्रवेश करा

Scanned with CamScanner

दिया। गाँव के साथी वासुदेव मिश्र, शाहिनाथ पाण्डेय भवानी चरण पाण्डेय, रामअक्षैवर पाण्डेय, बजरंग बली तिवारी, रामनिधि पाण्डेय इनके संग सुख से अलग न रहने के लिए उसी पाठशाला में भर्ती हो गए। पाठशाला जाते समय जब यह बटु समुदाय रामचरित मानस की चौपाइयां गाते हुए मार्ग पर बढ़ता तो नर नारी मुग्ध होकर सुनने के लिए खड़े हो जाते, मगर संस्कृत की पूर्ण शिक्षा पाने के पहले ही सभी साथियों सहित पाठशाला जाना बन्द कर दिए।

"विवाह एवं धनोपार्जन के लिये गृह त्याग"

इतिहास के पन्ने साक्षी हैं कि राजकुमार सिद्धार्थ के वीतराग मन को मोड़ने के लिये पिता सुद्धोधन नेउसको विवाह के माया बन्धन में बाँध दिया था। कृष्णा नन्द में अव्यक्त बीतराग की भावना भरती जा रही थी। उन दिनों संयुक्त प्रान्त (उत्तर प्रदेश) में बाल विवाह की प्रथा खूब प्रचलित थी। वाल्यकाल में ही यज्ञो पवीत के साथ-साथ कृष्णा नन्द का विवाह करा दिया गया, मगर इनकी धर्मपत्नी "श्रीमती छविराजी देवी के भाग्य में पति सुख अधिक नहीं था। विवाह के पश्चात् कुछ गम्भीरता का आना स्वभाविक था। चिन्तन के उन प्रथम क्षणों में कृष्णानन्द ने अनुभव किया कि मेरे माता-पिता बहुत ही गरीब हैं और अपनी गरीबी में हिस्सा बटाने के लिये मुझे आज तक पढ़ाते रहे और अब पत्नी का भार शिर पर लाद कर धनोपार्जन कराने की अभिलाषा भरे भविष्य का पक्षी पकड़ना चाहते हैं। माता पिता के प्रति प्रेम कृष्णानन्द के हृदय में उत्साह का ऐसा श्रोत बन गया कि एक रात माता के सोते समय उनकी पेटी से कुछ रुपए चोरी से निकाल कर बम्बई भाग गए।

प्रातः काल सीता देवी ने 'शुन्ना की पलंग खाली देखो तो उन्हें जैसे काठ मार गया। थोड़ी देर बाद ही उन्होंने

Scanned with CamScanner

फूट फूट कर रोना प्रारम्भ कर दिया। पास- पड़ोस के लोग एकत्र हो गए। लोगों ने समझाया कि कमाने के उद्देश्य से ही लड़का कहीं चला गया है, पर सन्तान का वियोग तो नासूर के समान है जिससे अविरल प्रवाह जारी रहता है। माता सीता देवी के आँसू न रुक सके। उन्होंने तब तक के लिए अन्न, जल त्याग दिया कि जब तक प्राण प्रिय सुत का मंगल समाचार न मिल जाय। मार्ग में आगे बढ़ते हुए माता, पिता और ग्राम मित्रों का वियोग कृष्णानन्द के हृदय को विदीर्ण कर रहा था। प्रयागराज में आकर सगर सुतों की उद्धारिका श्री गंगा मैया का दर्शन करने से इन्हें विचित्र आत्म सुख की अनुभूति हुई। अनुभूति में पिछला मानसिक दुख भूल गया इन्हें ऐसा प्रतीत हुआ मानों चिरकाल से विछुड़ी हुई श्री गंगा मैया आज मिल गईं। इसके पूर्व गंगा जी को देखने का अवसर नहीं मिला था।

गंगा जी के उसी पवित्र तट पर विलवार के पड़ोसी ग्राम नारायण पुर (नारीपुर) के पं० रामनाथ मिश्र और पंडित बच्चाराम मिश्र से इनकी भेंट हुई, ये लोग पहले से ही बम्बई जाकर धनोपार्जन कर रहे थे। अवकाश लेकर घर आए थे और पुनः बम्बई जा रहे थे। कृष्णानन्द ने दोनों को भगवान का भेजा हुआ पथ प्रदर्शक जानकर मन ही मन प्रणाम किया और उनके साथ स्टेशन आ गए। रेलगाड़ी में यह परिचय सघन मैत्री के रूप में बदल गया। बम्बई में इनके बाबा रघुनाथ प्रसाद तिवारी, ग्रामसाथी राम अक्षौबर पाण्डेय, श्री रामनिधि पाण्डेय, रामसिद्धि

Scanned with CamScanner

पाण्डेय, भुइँधरा के श्री वासुदेव तिवारी और पं० बैजनाथ दुबे पहले से ही रहा करते थे। ए इन्हीं लोगों के साथ बम्बई में रहने लगे। बम्बई जैसी विशाल नगरी को देखकर इन्हें चका चौंध सा हो जाना पड़ा। साँयकाल श्री बम्बादेवी, भगवान श्री लक्ष्मीनारायण और चौपाटी के निकट पहाड़ी पर संस्थापित श्री बाबुलनाथ के दर्शन से इन्हें आनन्द होने लगा।

गाँव वालों के पत्र से, इनके सकुशल बम्बई पहुँच जाने के समाचार से माता-पिता के हृदय की पीड़ा कुछ शान्त हो गई।

Scanned with CamScanner

धनोपार्जन का स्वर्ण योग

जापर कृपा राम की होई ।
तापर कृपा करें सब कोई ।।

शीघ्र ही वेंणीमाधव और सीता देवी के भाग्य उदय हो गए । बम्बई में मोती बाजार, बुलियन एक्सचेन्ज में उस समय सिलवरकिंग, सेठ चिम्मनराम मोती लाल भुनभुन वाले का प्रसिद्ध फर्म था । देश के भीतर उनकी कई मिलें और शाखाएँ फैली हुयी थीं । फर्म में चालीस, पच्चास क्लर्क मेहता, मुनीम और कैशियर कार्य करते थे । आते जाते कृष्णानन्द का सबसे परिचय हो गया और एक दिन उन्हें उस फर्म में बैतनिक सेवा करने का अवसर मिल गया । फर्म के कर्मचारियों से इन्हें बड़ा स्नेह हो गया । फर्म के मालिक का बंगला बालकेश्वर में था । घर की स्त्रियाँ अत्यन्त धार्मिक एवं उदार थीं । जब कभी किसी काम से आप बंगले पर पहुँचते तो स्त्रियाँ इन्हें धार्मिक ब्राह्मण के रूप में अन्न, वस्त्र और द्रव्य दान में देतीं । सेठ मोती लाल के सगे भान्जे श्री राधाकृष्ण डालमियाँ भी उसी बंगले में रहते थे । बड़े ही धर्मात्मा और उदार थे, उनके द्वारा इन्हें बहुत से रुपये दान में मिल जाया करते थे । दूकान से पर्याप्त वेतन मिलता था । दो तीन माह में उनके पास अच्छी रकम जमा हो गई ।

Scanned with CamScanner

इस समय तक घर की आर्थिक विपन्नता का भाव इनके हृदय से निकल चुका था। सामान्य शिक्षा प्राप्त एक व्यक्ति के पास हजार-डेढ़ हजार रुपये हो चुके थे अतः मन में अन्य कल्पनाओं की कोयल का कूकना असम्भव न था। बचपन के साथी याद आने लगे। इन्होंने पत्र देकर सरयू प्रसाद मिश्र, वासुदेव मिश्र, अयोध्या प्रसाद पाण्डेय, देवराज दुबे, सभी को बम्बई बुला लिया। वासुदेव मिश्र ने तो इनके साथ उसी फर्म में ही काम करने लगे। धीरे-धीरे सबको काम दिला दिए। उदार मना कृष्णानन्द अपने सुख को साथियों में बाँट दिए। दिन भर सब कार्य करते, सुबह-शाम हरि चर्चा करते अथवा मन्दिरों में जाकर देव दर्शन में समय बिताते।

कृष्णानन्द ने माता-पिता को रुपया भेजना प्रारम्भ किया तो थोड़े ही दिनों में उनकी गरीबी दूर हो गई। बड़े-बड़े बैल, दूध देने वाली गाएं और भैंसें दरवाजे पर बँधी रहने लगी। कुछ और कृषि योग्य भूमि खरीदी गई। धीरे धीरे दो तीन वर्ष बीत गए, एक दिन ए बड़े ठाट-बाट से बिलवार आ पहुँचे। माता सीता देवी के चरणों में शिर झुकाये, पर आनन्द मग्नामाता के कण्ठ से आर्शीवाद के बोल की जगह नैनों से स्नेह के आँसू निकलने लगे। रोती हुई वे कहने लगीं "चोर तूँ चोरी से भाग गया था, आज पकड़ में आया है। अब मैं तुझे नहीं जाने दूँगी,, धीरे धीरे सभी नाते और रिस्तेदारों को इनके घर आने की बात ज्ञात हो गई सब बड़े प्रसन्न हुए।

Scanned with CamScanner

ढाई माह घर रहकर आप माता-पिता की अनुमति से पुनः बम्बई चले आए। इस समय तक ए पूर्ण युवा, शरीर से हृष्ट पुष्ट एवं बलवान हो चुके थे। बड़े ही लगन से फर्म का काम करना प्रारम्भ कर दिए। इसी बीच पिता जी के अस्वस्थता का पत्र पाकर हृदय धड़कने लगा। कुछ पूर्व आभास सा होने लगा। दुःख की गठरी संभाले घर के लिए रवाना हो गए। पहुँचने के दूसरे दिन ही पिताजी इनके शिर से अपनी छाया सिमेट कर चले गये। धैर्य का बाँध टूट गया, रोने के अतिरिक्त कुछ और नहीं सूझ रहा था शनैः शनैः काल ने पिता के निधन लगे गम्भीर घाव को भर दिया अपने अनुज रामकिशोर को साथ ले जीवन संग्राम में विकट परिस्थितियों का सामना करने का निश्चय किया इसी बीच पति परांयणा सीता देवी ने भी पति का मार्ग अपना लिया। माता के निधन पर दोनों भाई संसार में स्नेह विहीन हो गए। दोनों का अन्तिम संस्कार करके कृष्णानन्द बम्बई वापस लौट आए।

माता-पिता के अवसान से इनके मन पर अनित्यता की एक करुण छाया पड़ चुकी थी। वासुदेव मिश्र, भवानी चरण पाण्डेय व्यास और रामयज्ञ आदि साथ रहकर सत्संग में सम्मिलित होते। सन्ध्या, वन्दन, गायत्री मंत्र का जाप, भगवान का पूजन, तर्पण आदि पुनीत कृत्य नित्य प्रति करने लगे। "कहावत है—

"जो हठि राखे धर्म को तेहि राखे करतार।

धर्म कर्म का नित्य पालन इन सब के अन्तः करण को

उज्ज्वल से उज्ज्वलतर करता गया। कृष्णानन्द और वासुदेव आलस्य छोड़ कर प्रातः काल चार बजे उठते थे और सन्ध्या, पूजन, तर्पण और अपने नित्य कर्मों में लग जाते। इनकी पवित्र ख्याति चारों ओर फैलने लगी। हर किसी को यह संदेह होने लगा कि अब इनको वीतराग होने में देर नहीं है। संयोग से श्री रामानुजा चार्य पीठाधीश्वर श्री देवनाय-का चार्य जी के चचेरे भाई व्यास सम्राट पं० व्रजभूषण जी इन्हें बम्बई में मिल गए। उन्होंने कृष्णानन्द जी को बिरजा नदी के किनारे श्री साकेत धाम का बड़ा सुन्दर माहात्म्य बताए। यह भी बताए कि जिस पर शास्त्र वर्णित गुरु कृपा, ईश्वर कृपा, शास्त्र कृपा और आत्म कृपा होती है, वही साकेत के माहात्म्य का फल पा सकता है।

कृष्णानन्द को शास्त्रों का कोई ज्ञान नहीं था। बड़े २ विद्वानों और भक्तों के सत्संग के द्वारा इस अभाव को पूरा करना प्रारम्भ कर दिया। तत्व ज्ञानी गुरू का इन्हें कोई पता न था। आत्मकृपा थी, उसी ने ईश्वर कृपा मानने का संकेत किया। ईश्वर कृपा की झलक भी दृष्टिगोचर होने लगी। अपने पराए का भेद-भाव मिटने लगा, "वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना हृदय में वास करने लगी। सारा संसार सियाराम-मय जान पड़ने लगा। एक दिन बम्बई के प्रसिद्ध माधव बाग मन्दिर में, भगवान श्री लक्ष्मीनारायण जी का दर्शन करने पहुँचे। उस दिन अनेक प्रकार के गुलाब के फूलों से भगवान का भव्य शृँगार किया गया था दर्शना-भिलाष से प्रतिमा के समक्ष खड़े होते ही भगवान श्री लक्ष्मी

Scanned with CamScanner

नारायण , लक्ष्मी जी सहित मंद मंद मुस्कराते से प्रतीत हुए । रहस्यों के सम्राट ने अपनी इस मुस्कान से अकिंचन की झोली भर दी ।

यह श्रावण का महीना था बाहर गगन मेघाछन्न था भीतर हृदय भक्ति से ओत प्रोत । रुपया-पैसा सभालना उस दिन से मुश्किल हो गया, ईश्वर के अनुरागी भाई श्री हनुमान प्रसाद जी पोद्दार, सेठ मेघराज के सुपुत्र श्री वनारसी लाल झुनझुन वाले के साथ सत्संग में व्यस्त रहने लगे । समय समय पर अर्चन वन्दन का उचित क्रम चलने लगा । कुछ ही दिनों में इनका हृदय भक्ति, प्रेम, ज्ञान और वैराग्य की उत्कट भावनाओं से मथ उठा और एक दिन वही हुआ जिसका संदेह बहुत दिनों से अनेकों के हृदय में चक्कर काट रहा था ।

Scanned with CamScanner

❀ त्याग के पथ पर ❀

शरद पूर्णिमां की रात्रि थी । चतुर्दिक शान्त धवल चन्द्रिका बरस रही थी । उस रात कृष्णानन्द को नीद नहीं आ रही थी । एक अव्यक्त अशान्ति, हृदय को उद्‌द्वेलित कर रही थी । अन्त में उसी ने इनका मार्ग दर्शन किया । सांसारिक बन्धनों को तोड़कर ए उठ खड़े हुए । हृदय में जगद्‌माता बम्बा देवी को धारण करके अश्रुपूर्ण नेत्रों से मायानगरी बम्बई को छोड़ कर चल दिए । प्रातः काल, इष्ट-मित्र, धर्मात्मा, सेठगण कृष्णानन्द के वैरागी होकर भाग जाने के समाचार से फूट-फूट कर रोने लगे, परन्तु पवन के प्रवल वेग को बड़े से बड़े पर्वत भी नहीं रोक सकते ।

त्यागी कृष्णानन्द पाप विनाशिनी भगवान विश्वनाथ की नगरी काशी में पहुँचे । सोचते थे यहाँ मन को शान्ति मिलेगी, परन्तु ज्ञान का प्यासा मन स्थिर न हो सका । सम्पूर्ण कार्तिक मास श्री गंगा जी के तट पर निवास कर पावन जल का सेवन करते रहे यद्यपि विश्वनाथ पुरी काशी, मुक्ति-दायिनी एवं विद्या की खान है, इन्हें तो उन दोनों से कुछ अधिक ज्ञानामृत की चाह थी । मन में अपार शान्ति की खोज थी । एक दिन मन में विचार उत्पन्न हुआ कि जंगलों से आच्छादित किसी पहाड़ की निर्जन गुफा में पहुँच कर शान्ति की खोज की जाय ।

Scanned with CamScanner

"बाँध पर पदार्पण"

जिला बदायूँ में श्री गंगा जी के तट पर सन्तशिरोमणि परम पूज्य श्री हरिबाबा जी महाराज का बहुश्रुत बाँध है। यह बाँध बहुत दिनों से उपासना का महान केन्द्र बना हुआ है। प्राकृतिक सौन्दर्य की अनुभूति होते ही ऐसा प्रतीत होता है मानों भक्ति महारानी साक्षात् नृत्य कर रही हों। पार्वत्य कन्दरा की खोज में बढ़ते हुए अशान्त मन कृष्णानन्द इसी बाँध पर पहुँच गए। इन्हें लगा जैसे गो लोक धाम में आ गए हैं। साज, बाज के साथ चलते हुए भगवन्नाम संकीर्तन का स्वर इनके कानों में मिश्री घोलने लगा, चारों ओर लहराते हुए पताके मोक्ष मार्ग को प्रसस्त करते से जान पड़े। ऐसी ही छटा की लालसा मन में अब्यक्त सोई थी, आज जाग पड़ी। प्रेम विभोर होकर ए वहीं भूमि पर लोट गए। उसी दशा में घन्टों पड़े रहे भक्तवत्सल भगवान का सिंहासन हिल उठा। बाँध पर उपस्थित सभी नर नारी की आँखे इन पर गड़ गईं, सब दौड़कर इनके पास पहुँचे उस समय इनकी डबडबाई आँखों में प्रेम, वैराग्य की विमल आभा देख कर सब का हृदय द्रवी भूत हो गया। कान ही कान पूरे बाँध पर यह बात फैल गई कि एक मनमोहक नवयुवक साधु बम्बई से आया है, जिसके रोम रोम से ईश्वर भक्ति और प्रेम की धारा निकलती हुई

Scanned with CamScanner

प्रतीत होती थी, । वह साक्षात्कार होते ही मन को आकर्षित कर लेता है।

उसी दिन से इनके दर्शन के लिए भारी भीड़ होने लगी। लोग मन ही मन इनका निरन्तर दर्शन पाने की कामना से भगवान की प्रार्थना करने लगे। वहीं वाँध पर ही एक दिन इन्हें, परम पूज्य श्री श्री उड़ियाबाबा जी महाराज का दर्शन हुआ उनके अतिरिक्त अन्य सन्त महात्माओं से भी एकान्त में मिले। स्वामी श्री हरिबाबा जी महाराज से आप इस प्रकार मिले जैसे चैतन्य महाप्रभु से श्री स्वामी नित्यानन्द जी महाराज मिल रहे हों। इस बाँध पर इन्हें अलौकिक आनन्द मिलने लगा, यह इनके लिए कल्प वृक्ष बन गया। स्वामी श्री करपात्री जी महाराज, ब्रह्मचारी श्री प्रभुदत्त जी महाराज एवं अनेक बीतराग संन्यासियों के दर्शन का सुयोग आप को इस बाँध पर मिला।

Scanned with CamScanner

"श्री उड़िया बाबा जी के साथ"

कर्णवास में

बाँध पर ही आप को ज्ञात हो गया कि कर्णवास में श्री उड़िया बाबा जी महाराज चातुर्मास कर रहे हैं। वहाँ पर अपूर्व सत्संग कथा, कीर्तन का आयोजन चल रहा है। कृष्णानन्द का मन तरंगित हो उठा और श्री महाराज जी के दर्शनार्थ वहीं पर पहुँच गए। प्रेम जिसका सम्बल हो, श्रद्धा और विश्वास जिसका मार्ग–दर्शक हो, उससे संसार की बड़ी से बड़ी सिद्धि दूर नहीं रह सकती। जाते ही श्री उड़िया बाबा जी महाराज के युगल श्री चरणों को प्रेमाश्रु से धोने लगे। बैठने की आज्ञा मिली और सिद्ध आसन से बैठ गए। श्री उड़िया बाबा जी महाराज बोले "आप तो चौबीस लाख गायत्री जप का अनुष्ठान कर रहे थे यहाँ क्यों चले आए?" आप ने नेत्रों से अश्रुधारा बहाते हुए उत्तर दिया "आप का दर्शन मेरे लिए महत्तम अनुष्ठान है" श्री उड़िया बाबा जी महाराज इस उत्तर की कल्पना भी नहीं कर सकते थे। उन्होंने तुरन्त ही पूछा "आप यह अनुष्ठान क्यों कर रहे हैं?" उस समय आप का हृदय भक्ति की अमृत धार से सिंचित हो रहा था। भावना की शीलन पर बाँणी फिसल गई। आप शिर झुकाए निरुत्तर बैठे रहे। श्री उड़िया बाबा जी, इस प्रेमालु युवा साधु को अपना सामीप्य प्रदान

Scanned with CamScanner

कर दिया। अगर कभी एकान्त आनन्द के लिए आप कर्णवास की झाड़ियों में चले जाते तो श्री उड़िया बाबा जी महाराज प्रेमेक्षुक हो कर लोगों से कहते "बम्बई वाले कृष्णानन्द कहाँ चले गए ?" यहीं से कर्णवास के लोग आप को स्वामी कृष्णानन्द बम्बई वाले कहने लगे।

कर्णवास में ही आप को विद्यावारिधि स्वामी श्री अखण्डानन्द जी महाराज, श्री स्वामी सनातन देव जी महाराज, स्वामी रामदास जी पटना वाले, स्वांमी श्री सिद्धेश्वर जी के दर्शन मिले और खूब सत्संग हुआ। सत्संग सभा में अन्य सभी महात्मा उड़िया बाबा जी से प्रश्न पूँछते, पर स्वामी कृष्णानन्द भगवान का स्मरण करते मौन बैठे रहते। इन्हें यह बात पूर्ण रूप से ज्ञात हो गई थी कि गुरु और आचार्यों का ज्ञान शिष्य को अपने आप प्राप्त होता है। प्रश्नों के आधार की आवश्यकता नहीं। वास्तव में जब गुरु हृदय की मुक्तावस्था में रहते हैं तब अपनी आत्मा का सच्चा स्वरूप, अपने आप वाणी के माध्यम से प्रगट कर देते हैं, और गुरु की आत्मा का प्रतिबिम्ब शिष्य की आत्मा पर पड़ना ही वास्तविक शिक्षा होती है।

अतएव प्रश्न पूँछना इनकी प्रकृति के प्रतिकूल हो गया था। श्री उड़िया बाबा जी को यह प्रतीत हो गया कि स्वामी रामकृष्ण परम हंस की तरह बम्बई वाले कृष्णा-नन्द के हृदय में भी भगवान श्री लक्ष्मीनारायण के प्रति अपार श्रद्धा, अटूट भक्ति, असीम प्रेम और अनुपम आशक्ति का सागर तरंगित हो रहा है। उनके हृदय का उद्गार

Scanned with CamScanner

फूट निकला। वे स्वामी कृष्णानन्द को लक्ष्य करते हुए कहने लगे। "जो भगवान को एक मन्दिर में, एक रूप में और केवल साकार मानता है, वह भगवान का भक्त नहीं है, विश्व के कंण-कंण, तृण-तृण में व्याप्त भगवान को एक सीमिति रूप में बांध देना भक्त का धर्म नहीं है। वह तो साकार और निराकार दोनों है, प्रह्लाद नेभगवान को निराकार पहले और साकार बाद में बताया। भक्त को भगवान खड्ग में, खम्भ में घट-घट में सर्वत्र निराकार और अव्यक्त दृष्टि गोचर होता है। भक्त जब निराकार ब्रह्म के ध्यान में निमग्न हो स्वयं को विस्मृत कर देता है तो उसे साकार भगवान का दर्शन होता है। जो भगवान् की, मूर्ति की पूजा को ही सब कुछ मान कर ही प्रांणि मात्र को तिरस्कृत करता है, उसकी पूजा और सेवा को भगवान् कभी स्वीकार नहीं करते। जिस प्रकार दूध में मक्खन ईख में गुड़ का अस्तित्व रहता है, उसी प्रकार भगवान भी सब में व्याप्त हैं,,। श्री उड़िया बाबा जी महाराज के ए उपदेश वचन स्वामी कृष्णानन्द के कर्णों में अमृत की वर्षा कर रहे थे। बाद में इस उपदेश की अमिट छाप आप के हृदय पर पड़ गई।

Scanned with CamScanner

दीक्षा लेकर संन्यासी बनने की महती उत्कंठा

"गुरु बिनु ज्ञान कहाँ ?,,—यही प्रश्न दिन-रात आप के कानों में गूँजने लगा। संन्यास लेने की हलचल सी मच गई। "दण्डग्रहण मात्रेण, नरो नारायणो भवेत्" की भावना इनके हृदय सागर में तरंगे लेने लगी। धर्म ग्रन्थ एवं शास्त्रादि में भी ब्राह्मण के लिये ही दण्ड ग्रहण करने का विधान है। इस इक्षित फल की प्राप्ति के हेतु आप अनूपशहर में विद्यावारिधि स्वामी श्री विष्णु आश्रम जी महाराज के गुरुदेव दण्डी स्वामी श्री रामकृष्ण आश्रम जी महाराज की पवित्र कुटिया पर पहुँच गए। यह आश्रम शहर के वाहर श्री गंगा जी के तट पर एक बीहड़ एवं निर्जन स्थान में स्थित है। श्री स्वामी जी के चरणों में अश्रुपूर्ण नेत्र विछाते हुए आप ने साष्टांग प्रणाम किया और वोले, "भगवन् ? मुझे दण्डी स्वामी बनाइए और संन्यास की दीक्षा दीजिए,,। श्री स्वामी रामकृष्ण आश्रम जी महाराज इनकी ख्याति पहले से ही सुन चुके थे। इनको देखते ही समझ गये कि इस साधु का भविष्य दूध की तरह निर्मल, पवित्र एवं उज्ज्वल है। हृदय में चाह, नेत्रों में सरलता लिए हुए श्री रामकृष्ण आश्रम जी कहने लगे—"मैं दण्ड धारी हूँ। तुम हरी वावा के बाँध पर अहीर, चमार तथा अन्य निम्न वर्ग के लोगों के साथ नाचते, गाते, बजाते

Scanned with CamScanner

भगवान के शरणा गत का प्रथम स्वरूप

स्वामी कृष्णा नन्द जी महाराज
बम्बई वाले

Scanned with CamScanner

और रोते हो। हर किसी को प्रणाम करते हो। ए सभी बातें एक दण्डी स्वामी के लिये वर्जित हैं।,, श्री रामकृष्ण आश्रम जी के शब्दों को सुनकर करुणार्द्र हो गये, नेत्र भर आए और बड़े विनम्र होकर कहने लगे, प्रभु ! मुझे संन्यास लेने की इस समय प्रबल इच्छा है, सोचता हूँ कि ब्राह्मण कुल में पैदा हुआ हूँ, दण्ड लेकर ही संन्यास लूँ।,,

जिस प्रकार पुत्र पिता के कलेजे का टुकड़ा होता है उसी प्रकार विद्वान गुरु अपने किसी योग्य शिष्य को हृदय से लगाने के लिये उद्यत रहता है। फिर श्री रामकृष्ण आश्रम जी कृष्णानन्द जैसे होन हार महापुरुष को क्यों न अपनाते ? उनका हृदय द्रवित हो गया उन्होंने कहा— "यद्यपि मैं जानता हूँ कि आप ऐसे मस्ताना संन्यासी होंगे कि दण्ड के नियम का पालन नहीं कर सकेंगे। तो भी सरयू पारीण ब्राह्मण कुल में आप का जन्म होने के नाते मैं आप को दीक्षा अवश्य दूँगा,,। गुरु की स्वीकृति मिलते ही कृष्णानन्द का हृदय कमल खिल उठा। दीक्षा का मुहूर्त निकाला गया। बाँध के आस पास निकटस्थ ग्रामों में यह चर्चा बिजली की तरह फैल गई। ग्रामवासियों ने अपने प्रिय साधु के दीक्षा संस्कार के अवसर पर अन्न, दूध, दही, घी, वस्त्र आदि की झड़ी लगा दी। श्री जानकी प्रसाद जी चेयर मैंन, कुँवर गुलाब सिंह, श्री रामेश्वर प्रसाद जी, श्री खुशी राम आदि ने महान सहयोग दिया। उस समय श्री हरि बाबा जी महाराज बाँध से छः मील दूर भिरावटी ग्राम में ठहरे हुए थे। उन्हें सादर आमंत्रित किया गया।

Scanned with CamScanner

संन्यास ग्रहण के इस शुभ मुहूर्त पर सात दिन का अखंड संकीर्तन महोत्सव रखा गया। श्री हरिबाबा जी महाराज ने कृष्णानन्द जी को आज्ञा दी कि इस संकीर्तन कार्यक्रम की कोई अवधि न रखी जाय। भगवान् की कृपा से यह अखण्ड संकीर्तन आठ वर्ष तक चलता रहा। श्री हरि बाबा जी के मन में कृष्णानन्द के प्रति अगाध स्नेह पैदा हो गया वे सोचने लगे कि यह तो महान संस्कारी पुरुष है, इसके द्वारा अवश्य ही विश्व का कल्याण होगा।

दीक्षा लेने के दो तीन माह पश्चात् कृष्णानन्द जी श्री गंगा जी के तट रामघाट पर परम पूज्य श्री उड़िया बाबा जी के पास पहुँचे वहाँ पर उपस्थित सभी महात्माओं तथा पल्टू बाबा को भी साष्टांग प्रणाम किया। श्री पल्टू बाबा एकाक्ष और अ ब्राह्मण थे। दण्डी स्वामियों में यह एक प्रश्न हवा की भाँति फैल गया, कि कृष्णानन्द ने अ ब्राह्मण पल्टू बाबा को क्यों प्रणाम किया ? महा विद्यालय नरवर, रामघाट, राजघाट आदि स्थानों में स्थापित आश्रमों के दण्डी स्वामियों ने बड़ा विरोध खड़ा किया कि कृष्णा नन्द ने तो दण्ड की मर्यादा ही नष्ट कर दी। उन दिनों श्री स्वामी रामकृष्ण आश्रम जी महाराज नरवर में थे, वहाँ रहने वाले ब्रह्मचारी, संन्यासी और पढ़ने वाले विद्यार्थियों से उनका बहुत अधिक प्यार था। एक दिन कृष्णानन्द जी को साँगवेद महाविद्यालय नरवर में दण्डी स्वामियों के बीच बुलाया गया।

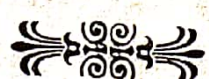

Scanned with CamScanner

नरवर महा विद्यालय का प्रांगण

सांध्य वेला थी । प्रांगण में दण्डी स्वामी श्री विश्वेश्वर आश्रम जो महाराज, ब्रह्मचारी श्री जीवन दत्त जी महाराज विद्यालय के सभी छात्र एवं आचार्य बैठे थे। नवीन दण्डी स्वामी श्री कृष्णानन्द जी द्वारा दण्ड की मर्यादा के उलंघन पर चर्चा हो रही थी। मर्यादा के उलंघन से सब को गहरी आपत्ति थी, फिर भी सभी ने निश्चय किया कि श्री कृष्णानन्द जी एक सरल प्रकृति के साधु हैं, नया वैराग्य है, नई अवस्था है इस लिए मनमाना कार्य कर रहे हैं। अतः उन्हें बुलाकर समझा दिया जाय कि भविष्य में वे दण्ड की मर्यादा पालन करने में असावधान न रहें।

इधर तो प्रांगण में इस प्रकार का विचार संघर्ष चल रहा था, उधर दण्डी स्वामी श्री कृष्णानन्द जी रामघाट में पूज्य श्री उड़िया बाबा जी महाराज तथा अन्य सन्तों के सत्संग में व्यस्त थे। नरवर यहाँ से चार पाँच मील दूर था। दूसरे दिन दो विद्यार्थी इन्हें नरवर ले जाने के लिए पहुँचे। जब यह बात अन्य सन्तों तक पहुँची तो सभी आश्चर्य में पड़ गए, महात्मा गण विचार करने लगे कि श्री कृष्णानन्द इस विकट परीक्षा में किस प्रकार सफल होंगे। जिस भगवान की करुणा से त्रिलोक सिंचित होकर

Scanned with CamScanner

हरा भरा हो जाता है उसी के चरणों में स्वयं को समर्पित करने वाले श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज को किसका भय सता सकता था। हाथ में दण्ड लेकर तथा श्री उड़िया बाबा जी एवं अन्य महात्माओं को प्रणाम कर मस्तानी गति से आप नरवर की ओर चल पड़े। उन क्षणों में समस्त विश्व उनका गुरु और भगवान प्रतीत हो रहा था। मार्ग में सर्वत्र आनन्द ही आनन्द बरस रहा था और मानस सागर में अंगणित भाव तरंगे हिलोरें ले रही थीं। पहुँचते ही देखा कि प्रातः स्मरणीय स्वामी श्री रामकृष्ण आश्रम जी महाराज, श्री स्वामी विष्णु आश्रम जी, ब्रह्मचारी श्री जीवन दत्त जी तथा विद्यालय के आचार्य एवं विद्यार्थी गण वहाँ पहले से ही उपस्थित हैं।

दण्डी स्वामी कृष्णानन्द जी ने सभी उपस्थित महात्माओं को पृथ्वी पर लेट कर साष्टांग प्रणाम किया। यहाँ फिर दण्ड मर्यादा का उलंघन था, एक दण्डी स्वामी अपने गुरु को छोड़कर अन्य किसी को भी साष्टांग प्रणाम नहीं करता, पर दण्डी स्वामी कृष्णानन्द जी तो साधन से दूर साध्य तक पहुँच चुके थे। इनके मन में तो सभी सन्त ईश्वर के ही अनेक रूप बन चुके थे। भगवान भक्ति सागर में गोता लगाते हुए इन्होंने "वसुधैव कुटुम्बकम् मान लिया था,, खड्ग, खम्भ और घट-घट में भगवान का अस्तित्व स्वीकार कर लिया था। अतः इनके लिए एक संकुचित वर्ग की किसी मर्यादा विशेष की रक्षा का कोई प्रश्न ही नहीं था। उसी समय एक दण्डी स्वामी ने कहा कि ऐसा

Scanned with CamScanner

प्रणाम तो रामानुज सम्प्रदाय के लोग ही करते हैं। दूसरे दण्डी स्वामी ने व्यंग किया कि रातदिन यही देखते हैं, यही सीखते हैं ऐसा नहीं तो फिर कैसा प्रणाम करेंगे। श्री श्री स्वामी विश्वेश्वर आश्रम जी ने कहा, "इन्होंने तो नाम मात्र के लिये दण्ड लिया है। दण्डधारण केवल दिखावा है, इनके भाव और विचार निराले हैं, ए चैतन्य महाप्रभु के चरण चिन्हों पर चलने वाले हैं। दिन-रात भजन कीर्तन करना, नाचना, गाना, हर किसी से लिपट कर रोना ही इनका काम है ए दण्ड की यर्मादा क्या जाने ? इन लोगों का हृदय ज्ञान, वैराग्य और बेदान्त के संस्कार से सर्वथा रहित है। ए झांझ, मजीरा और नक्कारों की ताल पर थिरकने और नाचने वाले साधु हैं; नृत्य के समय गन्धर्वों से बढ़ कर इनके भाव तथा नट की कला कृतियों से पूर्ण मन एवं नल-नील, अंगद, हनुमान की तरह उछलने वाला शरीर दण्ड के अतुल भार को कैसे सँभाल सकता है" ?

चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। श्री रामकृष्ण आश्रम जी अपने प्रिय शिष्य की दशा पर मन ही मन मुदित हो रहे थे। श्री कृष्णानन्द एक तरफ शिर नीचा किए मौन बैठे थे। श्री स्वामी विश्वेश्वर आश्रम जी के आलोचनात्मक शब्दों की बौछार इन पर हो रही थी। जैसे कमल के पत्ते पर पानी की बूँद पड़ने पर फिसल जाती है, उसी प्रकार इनके विमल हृदय पर श्री विश्वेश्वर आश्रम जी के आलोचनात्मक शब्द प्रभाव हीन होते जा रहे थे। विद्यालय के जिन छात्रों से कृष्णानन्द का अगाध

Scanned with CamScanner

स्नेह था वे पहले तो बहुत अप्रसन्न हो गए थे अब मन ही मन मुस्करा रहे थे। ज्ञान, भक्ति पर उछल-उछल कर प्रहार कर रहा था, पर भक्ति हिमालय की भाँति अटल थी, जब परीक्षा बाद की चरम सीमा हो गई, तो विद्यावारिधि स्वामी श्री विष्णु आश्रम जी महाराज ने प्रेम के इस पुजारी का पक्ष लिया। वे बोले, "जिसके हृदय में दया, स्नेह प्रेम, श्रद्धा भक्ति और विनय को स्थान मिल चुका है। वह आप की निरस मर्यादाओं में बँध कर अलौकिक आनन्द की प्राप्ति कैसे कर सकता है? प्रेम सागर में गोता लगाने वाले को आप दण्ड दे सकते हो, उनके ध्येय को बदल नहीं सकते।,, स्वामी श्री विष्णु आश्रम जी के सम्वेदना-पूर्ण शब्द सुन कर सभी के होठों पर स्मिति की रेखा सी दौड़ गई, सब किसी का मन प्रफुल्ल हो गया। इस पूरे समय तक स्वामी कृष्णानन्द मौन बैठे, प्रेमाश्रु भरे नेत्र लिए, शिर झुकाए अपने गुरुजन की वांणी को अमृत के समान पीते रहे। अन्त में गुरुदेव श्री रामकृष्ण आश्रम जी बड़े-बड़े छात्रों को आज्ञा दी कि इनको श्री गंगा जी में स्नान करा लाओ। सभा का विसर्जन हुआ। सब के हृदय में प्रेम का, संचार हो गया। स्वामी श्री कृन्णानन्द ने रात्रि भर विद्यालय में निवास किया प्रातः काल वहाँ से चले गए।

समय बीतता गया, एक दिन आप के मन में विचार उठा कि आत्मा की शान्ति के लिए मैने भगवान की शरण ली है, जिस कर्म से किसी के भी हृदय में क्षोभ हो उसे करना

Scanned with CamScanner

मेरा धर्म नहीं है। इस दण्ड की मर्यादा रखना मेरे बस के परे है। इसलिए इसे अब माँ गंगा जी को अर्पित कर देना चाहिए। वीतराग कृष्णानन्द जी कर्णवास की झाड़ी में पहुँचे बड़ी ही श्रद्धा से गंगा जी की गोद में दण्ड को समर्पित कर निश्चिन्त हो गए, धीरे-धीरे यह बात चारों ओर फैल गई। इस अद्‌भुत घटना से सभी दण्डी स्वामी आश्चर्य-चकित रह गए।

Scanned with CamScanner

"श्री भगवन्नाम संकीर्तन का प्रचार"

॥ हरेराम, हरेराम, राम, राम हरे-हरे, ॥

॥ हरेकृष्ण, हरेकृष्ण-कृष्ण-कृष्ण, हरे हरे ॥

श्री गंगा मैया को दण्ड अर्पित करने के पश्चात् श्री महाराज जी ने चिंतन किया, विश्व-कल्याण के उपाय पर विचार किया।

"कलयुग केवल नाम अधारा, सुमरि-सुमरि भव उतरहिं पारा।

की सत्यता का अनुभव इन्हें हुआ उसी दिन से महा मंत्र—"हरे राम, हरे राम, राम-राम हरे हरे, हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे, का प्रचार ही इनके जीवन का प्रमुख उद्देश्य हो गया। जीवन-संग्राम में कठिनाइयों से संघर्ष करते मानव मात्र का कल्याण, श्री राम नाम के प्रचार से ही हो सकता है। इस सद्भावना से ओत-प्रोत होकर आप स्थान-स्थान पर भगवन्नाम का प्रचार करने लगे। सबसे पहले जि० अलीगढ़ के सैडोल ग्राम में पहुँचे। यहाँ के प्रतिष्ठित व्यक्ति श्री सूर्य्यपाल शर्मा, श्री सिया राम शर्मा और ब्रह्मचारी श्री गौरीशंकर जी ने आप को बड़े आदर से ठहराया। धीरे-धीरे आस-पास के गाँवों के नर-नारी श्री महाराज जी के दर्शनार्थ एकत्रित होने लगे। आपकी सर-

Scanned with CamScanner

श्री हरिः

श्री मत् परमहंस परिव्राजकाचार्य

अनन्त श्री विभूषित श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज
बम्बई वाले

Scanned with CamScanner

लता और स्नेहशीलता सब के मन को अपने वश में कर लिया। निकट ही काजिसाबाद में सात दिन का अखंड संकीर्तन रखा गया। वायुमंडल में दिन-रात महामंत्र की सुमधुर परम पावन ध्वनि गूँजने लगी। पक्षियों के कलरव में भी महामंत्र ध्वनि का आभास हो रहा था। दस वर्गमील का क्षेत्र महामंत्र के प्रभाव से पुनीत होने लगा। आश्चर्य यह कि इस अनुष्ठान काल में ही कितने लोगों के मौन मनोरथ पूर्ण होते रहे। इस यज्ञ में 'स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज बम्बई वाले के पावन नाम की चर्चा और ख्याति चतुर्दिक फैलने लगी।

किन्तु सम्पूर्ण भारत के मानव समुदाय के आत्मिक कल्याण का व्रत लेने वाले स्वामी जी एक सीमित क्षेत्र में कब तक रुक सकते थे। हरदुवागंज होते हुए अलीगढ़, तत्पश्चात् हाथरस पहुँचे। वहाँ महामंत्र का एक बहुत बड़ा यज्ञ हुआ। सम्पूर्ण, अलीगढ़, आगरा और हाथरस के जिलों में संकीर्तन की धूम मच गई। गाँव-गाँव और घर-घर में बड़े ही उत्साह से लोग कीट भृँगन्नयाय के अनुसार संकीर्तन-समारोह करने लगे। स्वामी जी जहाँ पहुँचते, लोग उन्मत्त होकर आप के दर्शन के लिए दौड़ पड़ते।

बरहन में श्री स्वामी जी सर दीवान बहादुर के बगीचे में ठहरे। यह बगीचा गांव से कुछ दूर पर है, वृक्षों की शीतल छाया, एकान्त आनन्द और नैसर्गिक छटा तो वहाँ पहले से ही थी। महामन्त्र जाप ने बगीचा की शोभा

और अद्भुत बना दी। बगीचे को स्वामी जी का निवास स्थान मानकर बाबू श्री अच्छे लाल जी तथा न्यायाधीश बाबू स्वरूप नारायण जी ने उसमें एक सुन्दर कुटीर और एक कुआँ बनवा दिया। वह बाग नन्दन वन की भाँति सुन्दर और सुखद बन गया। इसी बगीचे में आवागढ़ के राजा साहब श्री सूर्यपाल सिंह जी, पंडित चोखेलाल जी, श्री शंकर दत्त जी, पं० रघुवीर प्रसाद दीक्षित, श्री रघुवीर किशोर कुलश्रेष्ठ ने स्वामी जी के दर्शन किये। इन लोगों ने रामनाम माहात्म्य समझ कर संकीर्तन यज्ञ का प्रचार जी तोड़कर किया। लोगों में जागृति आई। सभी वर्णों के हिन्दू लोग भगवन्नाम के दीवाने हो गए। छुआ छूत का भेद नहीं था –"जाति-पांति पूछै नहिं कोई, हरि को भजै सो हरि का होई"। सर दीवान बहादुर साहब, बाबू अच्छे लाल जी के सुपुत्र बाबू दयाकृष्ण जी कुलश्रेष्ठ आगरा कालेज, में प्राचार्य थे। स्वामी जी का चतुर्दिक व्याप्त प्रभाव देखकर इनके हृदय में श्रद्धा का ऐसा श्रोत फूटा कि एक दिन उन्होंने स्वामी जी का दर्शन कर इनके ध्येय को अपने जीवन में उतारने का व्रत ले लिया। ऐसा मिलन देख कर रामकृष्ण परम हंस जी महाराज से होनहार तरुण तपस्वी स्वामी विवेकानन्द के मिलन की कल्पना हो रही थी।

खेत-खलिहान सभी जगह काम करते समय नर-नारी श्री राम नाम का जाप करने लगे छोटे-छोटे बच्चों पर इनका बहुत प्रभाव पड़ा। ए नन्हें मुन्ने बालक राम-नाम के इस

Scanned with CamScanner

प्रचार में बड़ा साथ देने लगे। ए हठ करके अपने माता पिता को यज्ञ स्थल तक ले आते तथा उन्हें अनुष्ठान में सम्मिलित होने का अकारण अवसर प्रदान करते। बच्चों के प्रिय स्वामी कृष्णानन्द जी के नाम के प्रति सभी के हृदय में अपार श्रद्धा उत्पन्न हो गई। इसी श्रद्धा के वशी-भूत अहारन गांव में वहाँ के पुलिस इन्सपेक्टर श्री भानु प्रताप सिंह आप के परम शिष्य बन गये। श्री राम-नाम का प्रचार करते श्री स्वामी जी टूँडला के पास मदावली ग्राम के बाहर एक निर्जन स्थान पर पहुँचे। वहाँ पहले से ही एक कुँआ और खाली कुटिया विद्यमान थी। वहीं पर नौ दिन के अखंड संकीर्तन का आयोजन किया गया। इससे टूँडला, एत्मादपुर, फिरोजाबाद आदि नगरों में संकीर्तन की चर्चा बढ़ी।

यह एक नई धारा थी। स्वामी जी ने अपने प्यार और स्नेह से सब को आदर दिया। स्वामी जी के सात्विक सरल जीवन ने ही आप को भारत के त्याग शील महान पुरुषों की श्रेणी में ला दिया। जि० आगरा आप के ध्येय का प्रारम्भिक केन्द्र बन गया, जिस प्रकार कभी कृष्ण के बंशी रव से मथुरा, वृन्दावन की भूमि गूँजा करती थी उसी प्रकार भगवन्नाम से आगरा की भूमि गूँजने लगी। इसी जिले में बमरौली कटारा नामक स्थान पर एक महान यज्ञ हुआ। उसके पश्चात् बदायूँ, मथुरा, बुलन्द शहर आदि जिलों में संकीर्तन का प्रचार चरम सीमा तक पहुँच गया। जो आनन्द, वियोगी को योगावस्था में, कवि को

हृदय की मुक्तावस्था में और बालक को क्रीड़ावस्था में, मिलता है वहीं आनन्द साज बाज के साथ भगवान के भक्तों को कीर्तन करते करते समाधि-अवस्था में प्राप्त होने लगा। बच्चों से बूढ़ों तक में संकीर्तन के प्रति वर्णनातीत श्रद्धा जागृत हो गई।

कुछ समय के पश्चात् आप के प्रेम में व्याकुल, आप के बचपन के साथियों के कानों तक संकीर्तन के प्रचार की चर्चा बम्बई पहुँची। किसी सज्जन ने सूचना दी कि स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज बम्बई वाले के तत्वावधान में आगरा जि० के डौकी थाना में श्री भानु प्रताप थानेदार के यहाँ संकीर्तन हो रहा है। मैंने स्वयं जाकर श्री महाराज जी का दर्शन किया है। सुनते ही मित्र गण विभोर हो गये, दर्शन के लिए प्यासे सब के नैन व्याकुल हो गए। श्री वासुदेव जी मिश्र, भवानी चरण पाण्डेय, शिवबालक तिवारी, श्री राम हर्ष सिंह, पं० सूर्यबली दुबे, श्री राम अधार दुबे, राम अजोर मिश्र, श्री राज नारायण, पं० सम्पत प्रसाद मिश्र, राम यज्ञ तिवारी आदि ने बम्बई में निश्चय किया कि श्री स्वामी जी को बम्बई ले आना चाहिए। यहाँ से अपने पिछड़े हुए क्षेत्र विलवार, जौनपुर के कल्याणार्थ ले चलना चाहिए। निश्चय के साथ आवश्यक धन भी एकत्रित हो गया।

श्री वासुदेव जी इन्हें खोजते हुए आगरा पहुँचे, किन्तु उसके पहले स्वामी डौकी छोड़ कर कहीं अन्यत्र चले गए

थे। इन्हें न पाकर वासुदेव जी फूट फूट कर रोते हुए धरती पर गिर पड़े। स्वामी जी का भक्त समझ कर गाँव वालों ने उनका बड़ा आदर सत्कार किया। वासुदेव जी निराश होकर बम्बई वापस लौट आए। तीन माह के पश्चात् डौकी वालों से श्री महाराज जी को अपने प्रिय सखा के आगमन की जानकारी हुई, उनके प्रेम की बातें सुनकर आप की आँखें भर आईं, और मन में बम्बई जाने की प्रबल इच्छा जागृत हुई।

बम्बई के लिये पैदल यात्रा

जिसे प्रेम और वैराग्य का नशा हो वह सब कुछ कर सकता है। संकल्प की सिद्धि के लिये जिसने कमर कस ली है, जो अपने ध्येय और लक्ष्य पर अटल है, जिसे पुरुषार्थ, साहस विवेक और धैर्य का सहारा है, वह काटों के मार्ग पर भी सुगमता से चल सकता है। गगन स्पर्शी पर्वतों को लांघता है, असम्भव को सम्भव कर देता है, स्वामी जी के मन में बम्बई जाने की इच्छा जागृत हो चुकी थी वैराग्य के नशे में पैदल भ्रमण करने की उमंग भर दी। पैदल यात्रा का व्रत ले एक दिन प्रातः काल चार बजे आगरा से बम्बई के लिये चल पड़े। रेल पथ का सहारा लिए आगे बढ़ते रहे।

एक दिन दोपहर को बड़ी धूप पड़ रही थी। पशु पक्षी और सभी प्राणी गर्मी से व्याकुल हो रहे थे, उस समय भी संकल्प पर दृढ़ स्वामी जी अपने पथ पर बढ़ते जा रहे थे। इन्हें पूर्ण विश्वास था कि दया सिन्धु भगवान के राज्य में कोई भूखा नहीं रहने पाता, मार्ग में चलते हुए क्षुधा बढ़ती जा रही थी। कुछ देर बाद एक गांव पर दृष्टि पड़ी। आपने मन में विचार किया कि यहीं किसी घर से भिक्षा मांग कर क्षुधा शान्त कर लें। रेल पथ

Scanned with CamScanner

छोड़ गाँव की ओर मुड़े। एक ब्राह्मण के द्वार पर पहुँच कर भिक्षा याचना किए। ब्राह्मण अभी-अभी खेत पर काम करके लौटा था स्वयं भी भूखा था,। अतः झल्ला कर कहने लगा—"अरे साधु, तू इतना विशालकाय होकर कोई काम क्यों नहीं करता ? इधर-उधर क्यों भटकता फिरता है" ?

ब्राह्मण की बात सुनकर बड़ी नम्रता से हाथ जोड़ कर बोले ! "पंडित जी ! मैं भी काम करके खाता था, आप ही की तरह गृहस्थ था, परन्तु भगवान के विधान को कौन बदल सकता है ? आज आप के द्वार पर भिक्षा मांग रहा हूँ। चारों आश्रमों में यह संन्यास भिक्षुक आश्रम ही है। क्या पता, कल क्या हो जाय ? इसलिए किसी भी बात का अहंकार नहीं करना चाहिये। भगवान आप का भला करें,,। इतना कह कर ज्यों ही आगे बढ़े उस ब्राह्मण का मन बदल गया। सामने आकर साष्टांग प्रणाम करते हुए प्रार्थना करने लगा —"मैंने आप को निरा भिखारी साधु ही समझा था, आप तो साक्षात् दया की मूर्ति हैं। मैं अकिंचन प्रांणी हूँ, मेरे अपराध को क्षमा करें। आप मेरे यहाँ ठहरिए और दीक्षा देकर अपना बनाइए, मैं आप का दास हूँ।,, महाराज जी ने उसे शान्त्वना देते हुए कहा इसमें आप का कोई दोष नहीं, यह कलयुग का प्रभाव है,,। थोड़ी ही देर में यह समाचार गाँव भर में फैल गया, दर्शन के लिये लोगों का तांता बँध गया। सब के घरों से नाना प्रकार के सामान आने लगे, स्वामी जी ने भगवान

Scanned with CamScanner

का प्रसाद ग्रहण करने के पश्चात् एक नीम के वृक्ष को छाया में विश्राम किया। गाँव वालों ने दो एक दिन और ठहरने का प्रयास किया, पर सरिता के प्रवाह और संकल्प शील संन्यासी की यात्रा को कौन रोक सकता है ? स्वामी जी चल पड़े।

अब तक यात्रा के कई दिन व्यतीत हो चुके थे, इस यात्रा में आप के संन्यास- धर्म की अकारण परीक्षा होती चल रही थी। श्री श्री उड़िया बाबा जी से आपको पहले ही ज्ञात हो चुका था कि संन्यासी सूर्य्यास्त के बाद भिक्षा की याचना नहीं करते। एक दिन चलते-चलते संध्या हो गई एक गाँव में रात्रि में विश्राम करना चाहा, गाँव में अधिकांश साधु द्वेषी लोग थे, सब हाथ में डण्डे लेकर दौड़ पड़े और प्रहार करना चाहा, पर साँच को आँच नहीं लगती, स्वामी जी पर्वत की भाँति एक जगह अटल खड़े हो गए। जिसके रक्षक भगवान हैं उसका कौन क्या कर सकता है। इन्होंने ग्रामवासियों से पूँछा, मुझसे कौन सी भूल हुई कि आप लोग लाठियों से स्वागत कर रहे हैं ?,, लोगों ने बताया कि अभी थोड़े ही दिन पहले एक साधु भगवान के नाम पर हम लोगों को ठग ले गया। इन्होंने नम्रता से कुछ कहना चाहा तो वे लोग और उत्तेजित हो गए। उनके मनोभाव की परख करते ही श्री महाराज जी दूसरे गाँव की ओर चल पड़े, वह गांव वहाँ से लगभग तीन मील दूर था।

Scanned with CamScanner

अब सूर्य्य की किरणें केवल वृक्षों की शिखाओं पर ही चमक रही थीं। गाँव तक पहुँचने में काफी रात हो जाने की सम्भावना थी। थोड़ी ही दूर पर पेड़ों के नीचे खाना-बदोश कंजड़ अपना डेरा डाले पड़े थे। उन्होंने स्वामी जी को देखा तो बड़ी श्रद्धा से पूंछा–"बाबाजी ! कहाँ जायँगे ? रात होने वाली है।,, स्वामी जी ने ग्रामवासियों के व्यवहार की बात कह सुनाई, कंजड़ों ने अपने डेरे में ठहरने के लिए प्रार्थना की, मन को शान्ति मिली। गरीब कंजड़ों ने अपने साधु अतिथि का सच्चे हृदय से स्वागत किया। जैसे मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम चन्द्र जी ने वन यात्रा के समय कोल, किरात, संन्थाल और गोंड़ जाति के लोगों की भी सेवा स्वीकार करके अलौकिक सुख का अनुभव किया था वही स्थिति इस समय श्री महाराज जी की हो रही थी। कंजड़ों ने दूध, आलू और गेहूँ का आटा इनके सामने रख दिया। सबरी के बेर और विदुर के साग की भाँति इसे हृदय स्वीकार किया। आटे की बाटी बनाकर ताजे दूध के साथ भगवान का भोग लगाया। कंजड़ बहुत ही प्रसन्न हुए, सभी स्त्री-पुरुष ढोल-मजीरा, खझड़ी लेकर स्वामी जी के समीप एकत्र हो गए रात में कीर्तन, भजन और गीत से आस पास का वातावरण निर्मल हो गया। स्वयं श्री महाराज जी को आभास होने लगा मानों बाँध पर संकीर्तन समारोह में उपस्थित हैं। कंजड़ों ने इन्हें दो चार दिन ठहरने के लिए प्रार्थना किया पर सांसारिक माया का बंधन काट चुकने वाले साधु को न रोंक सके।

आशीर्वाद देकर प्रातःकाल चार बजे भगवन्नाम की रट लगाते हुए अपने लक्ष्य पथ पर बढ़ चले।

इस प्रकार मार्ग में अनेकों कष्ट झेलते हुए डेढ़ माह व्यतीत हो गए थे अभी आप की यात्रा,मात्र आधी पूर्ण हुई थी वीहड़ वन, भयानक पर्वत नदी और घाटी पार करते हुए जब आप बड़ौदा पहुँचे, तो भगवान के किसी अनन्य भक्त ने बम्बई के लिए टिकट खरीद कर आप को हठात् ट्रेन पर बैठा दिया। ईश्वर के एक भक्त के हठ के सामने स्वामी जी ने अपना संकल्प तोड़ कर अच्छा किया या नहीं इसे या तो अंतर्यामी भगवान ही जान सकता है, या स्वयं श्री महाराज जी। आठ घन्टे की रेल-यात्रा के पश्चात् आप बड़ौदा से बम्बई पहुँच गए।

बम्बई सेन्ट्रल स्टेशन पर उतरे, वहाँ से पैदल चल कर कालवा देवी पहुँचे। वहाँ की जनाकीर्ण गलियों में होते हुए सबसे पहले माधव बाग में भगवान श्री लक्ष्मी नारायण जी के दर्शन किए। बहुत काल के बिछुड़े हुए अपने इष्ट देव के दर्शन मात्र से ही नेत्रों से अविरल अश्रुधार बहने लगी। वहाँ से निकल कर आदि शक्ति भगवती माँ बम्बा-देवी के दर्शनार्थ मन्दिर में पहुँचे यहीं पर आप के परम प्रिय मित्रों ने इन्हें देखा, भिक्षुक सन्यासी के रूप में पाकर सब फूट-फूट कर रोने लगे, ये सबसे गले मिले, सब को शान्त्वना दी, सब के जीवन में एक नवीन चेतना का प्रादुर्भाव हुआ। दर्शनों की प्यासी सूखी आंखो में आनन्द जल की चमक उभर आई, और सब अपार सुख का अनुभव करने लगे।

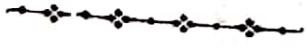

सत्संग भवन बम्बई में एक माह का अखण्ड संकीर्तन

श्री महाराज जी के बम्बई आगमन का समाचार बिजली की भाँति सम्पूर्ण नगर में फैल गया। आपके प्रेमी बहुत से नगर-सेठ और सभी मित्रगण दर्शनार्थ दौड़ पड़े। श्री वासुदेव मिश्र, श्री सुरेश्वरानन्द जी, श्री रामनिद्धि पाण्डेय, श्री माता गुलाम तिवारी, श्री भवानी चरण पाण्डेय और श्री शिवबालक तिवारी ने नव संस्थापित सत्संग भवन बम्बई में एक मास के अखण्ड संकीर्तन की योजना बनाई, यह सत्संग भवन दादी सेठ अग्यारी लेन बम्बई नं० २ में स्थित सिहानियां वाड़ी के दूसरे खण्ड में आज भी है। इसकी स्थापना भाई श्री हनुमान प्रसाद जी पोद्दार ने की, संरक्षण का भार श्री चिरंजीलाल जी गोयनका, श्री भगवानदासजी सिहानिया और श्री चिरंजी लाल डिडवानिया ने ग्रहण किया। सब ने श्रद्धापूर्वक अखण्ड संकीर्तन में सहयोग दिया, अखण्ड भगवन्नाम संकीर्तन प्रारम्भ हुआ। श्री रामनाम का सम्मोहन सम्पूर्ण कालवा देवी क्षेत्र पर छा गया। धनी हों या निर्धन, समाचार पाते ही दौड़ पड़े। पहले जो लोग इसका चलना असम्भव मानते थे, निरन्तर अखण्ड ध्वनि रहने पर उनके मन में भी भगवान की अलौकिक लीला का आभास होने लगा। धर्मात्मा, धनी, जैसे सेठ श्री वृजमोहन लाल जी बाराबंकी वाले, राजा बहादुर मोतीलाल बंशीलाल

Scanned with CamScanner

जी, राजा साहब गोपीलाल बंकट लाल जी, श्री गदाधर प्रसाद जी सोमानी, श्री चिम्मनराम मोतीलाल के फर्म से श्री बनारसी लाल झुन-झुन वाले, श्री राम किशन सागरमल जी, श्री स्वरूपचन्द्र पृथ्वीराज, रुँगटा फर्म के श्री महावीर प्रसाद बद्री प्रसाद जी रुँगटा, बहन जी श्रीमती लीलावती देवी पोद्दार आदि ने इस यज्ञ में बड़ा सहयोग दिया जिन लोगों को भगवन्नाम से अरुचि रहती थी इस नाम यज्ञ के प्रताप से वे भी भगवान के नाम के दीवाने बन गये। अनेकों संकीर्तन मण्डलियाँ बन गईं। श्री माधव बाग संकीर्तन मण्डल, श्री नवनीत लाल जी का संकीर्तन मण्डल, श्री नर-नारायण भगवान का संकीर्तन मण्डल, अखिल भारतीय श्री राधाकृष्ण संकीर्तन मण्डल के सहयोग से सत्संग भवन संकीर्तन का केन्द्र बन गया। आज भी प्रातः और सायंकाल यहाँ संकीर्तन होता रहता है। अखिल भारतीय श्री राधा-कृष्ण संकीर्तन मण्डल श्री महाराज जी के साथ साथ भारत के कोने-कोने में भगवन्नाम का प्रचार कर रहा है।

सत्संग भवन में स्वर्गीय वासुदेव मिश्र के सुपुत्र श्री ओंकारनाथ, श्री राम अधार दुबे एवं अन्य भक्त गण वैदिक त्योहारों पर कथा-कीर्तन एवं प्रवचन आदि का आयोजन करते रहते हैं। जब से वहाँ पूज्य श्री स्वामी जी महाराज के संयोजन में एक मास का अखण्ड संकीर्तन हुआ तभी से लोगों के हृदय में, भगवन्नाम के प्रति चेतना का जो दीपक जला है वह कदाचित चिरकाल तक अपनी आभा का दान बाँटता रहेगा।

Scanned with CamScanner

जन्मभूमि के लिए प्रस्थान

सत्संग भवन में एक माह का अखण्ड संकीर्तन समाप्त हो गया तो महाराज जी के बाल सखा श्री रामअक्षैवर पाण्डेय श्री परमेश्वरदत्त, श्री सत्यनारायण जी एवं जगदेव शर्मा ने विचार किया कि श्री महाराज जी को जन्म भूमि पर ले चलना चाहिए। स्वीकृति लेने का भार श्री वासुदेव पर रखा गया। एक दिन वासुदेव जी के साथ-साथ श्री पारसनाथ तिवारी, श्री केदारनाथ मिश्र, श्री महादेव जी और श्री भवानी चरण (ब्रह्मचारी—भगत जी व्यास) आदि ने स्वामी जी से सनिवेदन कहा—"प्रभु ? आपने आगरा, अलीगढ़, हाथरस, टूंडला आदि स्थानों में संकीर्तन का प्रचार करके उन क्षेत्रों को विमलता प्रदान की, वहाँ के लोगों को अन्धकार से प्रकाश में लाने की कृपा की, आगरा को भक्ति का केन्द्र बना दिया। अब आप जन्मभूमि जौनपुर का भी उद्धार करें। आप जैसे पथ-प्रदर्शक को पाकर हम बड़े भाग्यवान बनेंगे। यदि आपने स्वीकृति न दी तो हम लोगों के लिए संसार में कोई सहारा न रह जायगा। आप दयालु हैं, हमारी अभिलाषा अवश्य पूर्ण करेंगे। वहाँ के हजारों नर-नारी आप के वियोग से दुःखी और व्याकुल हैं, आप की चाची माता प्रसाद, जी की धर्मपत्नी आपके दर्शन के लिए तड़प रही

हैं। न पाने पर विष पान कर लेंगी। यद्यपि आपको गेरुवा वस्त्रधारी भिक्षुक वेष में देखकर उनका धैर्य टूट जायगा। फिर भी आपके दर्शन से उनके हृदय को बड़ी शान्त्वना मिलेगी। श्री महाराज जी इस अनुरोध को टाल नहीं सके। स्वीकृति के साथ-साथ आवश्यक धन जमा कर लिया गया और एक दिन महाराज जन्मभूमि, विलवार ग्राम के समीप सर्वेमऊ ग्राम में बाबा बलदेव दास जी की कुटिया पर पहुँच गए।

कुटिया के समीप शंकर जी का एक विशाल मन्दिर है, पास ही में एक कुवाँ और चारों ओर पंक्तिबद्ध आम के वृक्ष खड़े हैं। वहाँ पन्द्रह दिन का अखण्ड संकीर्तन समारोह आयोजित किया गया। संकीर्तन के साथ-साथ प्रतिदिन सायंकाल व्यास सम्राट श्री ब्रजभूषण जी द्वारा श्री राम-चरितमानस की ललित कथा एवं श्री रामानुज पीठाधीश्वर अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु श्री देवनायकाचार्य जी के सुमधुर कल्याणकारी उपदेश होने लगे। देहात में ऐसा पावन एवं भव्य समारोह का होना एक अलौकिक बात थी। प्रेम, वैराग्य, ज्ञान, भक्ति का इतना सरस और अनुपम दृश्य इसके पूर्व कभी किसी ने नहीं देखा था। प्रेम विभोर होकर लोग नाचने लगते, प्रातः से सायं तक नर-नारी की अपार भीड़ लगी रहती थी। एक अनुपम आनन्द बरस रहा था। स्थानीय ग्रामवासी जनता ने महान सहयोग दिया। इसी समारोह में श्री स्वामी भागवता नन्द जी, श्री महाराज से गुरु दीक्षा लिए। जो आज कल परम पूज्य श्री

हरिबाबा जी महाराज के बाँध पर विराज मान हैं। श्री महाराजजी ने उन्हें श्री रामचरित मानस का १०८ पाठ करने का आदेश दिया। इसी समय अपने पिता जी के साथ श्री मोहनानन्द जी ने, पूज्य पाद श्री महाराज जी के दर्शन किए। श्री महाराज जी के अपूर्व वैराग्य और वैभव को देख कर मोहनानन्द जी के पिता के हृदय में अपार श्रद्धा और भक्ति जागृत हो गई। श्री मोहनानन्द जी संस्कारी जीव थे, घर न जाकर वहीं रह गए। स्वामी जी से उन्हें बड़ा प्रेम हो गया। महाराज श्री की स्नेहमई दृष्टि उन पर पड़ी, और उन्हें अपना मित्र बना लिया. आज वही मोहनानन्द शास्त्री के नाम से प्रसिद्ध हैं।

इसी संकीर्तन यज्ञ में संकीर्तन कला निधि पं० गायत्री प्रसाद जी धारीपुर वाले, पं० गुरुप्रसाद जी, प्रेम के पूरा वाले, पं० सत्यनारायण जी, पं० हरिश्चन्द्र, श्री जैकरन जी पाण्डेय, श्री राजमूरति सिंह डालू पुर वाले, पं० ईश्वरदत्त जी, पं० रामसूरतिजी, पं० रामतवंकल पाण्डेय (हनुमान जी), पं० रामनरेश जी शास्त्री, श्री भगौती प्रसाद साधु, पं० देवराज शास्त्री, पं० बद्री प्रसाद शास्त्री, पं० रामराज दुबे, पं० सरयू प्रसाद, पं० वासुदेव तिवारी, पं० राम अजोर, श्री प्रभुनाथ जी आदि ने सहयोग का ऐसा आदर्श स्थापित किया जो अपने ढंग का निराला था। जब हारमोनियम, बेन्जों, बाँसुरी, ढोलक, झाँझ और नक्कारे के सम्मिलित स्वर में महामंत्र की मधुर-ध्वनि फूटती, फैलती और गूँजती.

Scanned with CamScanner

तो लोग मंत्र मुग्ध से स्वयं को भूल जाते। यही मण्डल अखिल भारतीय श्री राधाकृष्ण संकीर्तन .मण्डल के नाम से विख्यात आज भी चतुर्दिक भारत भ्रमण करता रहता है। इस महोत्सव की समाप्ति पर श्री, स्वामी जी जब जाने लगे तो वियोग का एक दुःखद करुण प्रसंग फिर से छा गया, नर-नारी अविरल अश्रु बहा रहे थे। बृक्षों के पत्ते खड़कते तो ऐसा लगता मानों वे भी सिसक रहे हैं।

दो दिन बाद समाचार मिला कि विलवार से तीन मील दूर बाल्हामऊ ग्राम में सई नदी के किनारे आम के सघन बृक्षों की शीतल छाया में श्री महाराज जी एक मास के अखण्ड संकीर्तन समारोह का कार्य क्रम बना रहे हैं। लोगों की खुशी का ठिकाना न रहा उस घाट का नाम भी राधा विहार घाट रख दिया गया। एक मास तक परम पावन सर्व सुखदायक श्री भगवन्नाम ध्वनि से आस-पास की मेंदनी गुंजरित होती रही, बगीचा नन्दन वन की भाँति हजारों नर-नारी भक्तों से भरा रहने लगा। इसी शुभ अवसर पर श्री चन्द्रभूषण जी व्यास का बड़ा ही सुन्दर श्री मद्भागवत सप्ताह हुआ। इनकी मनोहर कथा को सुनकर श्री स्वामी जी महाराज के आँखों से अश्रुपात होने लगता था। सभी को स्वर्गीय आनन्द की अनुभूति होती रही, इस नाम यज्ञ की पूर्णाहुति होते ही प्रतापगढ़ जिले के केवरा और परमा के पूरा गाँव के भक्त लोग बड़े प्रेम और श्रद्धा से अपने यहाँ आप को लिवा ले गए। वहाँ पर भी अखण्ड संकीर्तन, कथा-प्रवचन का बड़ा ही सुन्दर कार्यक्रम रखा गया। यहीं पर

महाराज श्री ने "कैलाश आश्रम" की स्थापना की। इसी को पूज्य श्री हरिबाबा जी का आश्रम भी कहा जाता है। पास ही में श्री बजरंग बाग है, जहाँ पर श्री हनुमानजी का विशाल मन्दिर बन रहा है। यहीं पर दो मंज़िल की एक बहुत सुन्दर कुटिया बनी हुई है।

कैलाश आश्रम की यज्ञ के बाद पूज्य स्वामी जी पं० राजमणि के साथ इलाहाबाद पहुँचे। यहाँ कटरा का एक संकीर्तन मण्डल प्रतिदिन संकीर्तन करते हुए श्री महाराज जी के साथ गंगा जी स्नान के लिए जाता था। धीरे-धीरे संकीर्तन का प्रभाव सम्पूर्ण शहर में छा गया। प्रातः-सायं नर-नारियों की अपार भीड़ होने लगी। ख्याति बढ़ रही थी, परन्तु इनका मन एक संकुचित स्थान पर शान्ति न पा सका। एक दिन चुपके से कमण्डल उठाए और बृन्दावन पहुँच गए। वहाँ दावानल पर श्री उड़िया बाबा जी का श्री कृष्ण आश्रम बनकर तैयार हो चुका था। बृन्दावन पहुँचते ही श्री आनन्द मयी माँ का दर्शन हुआ। माँ जी के स्नेह और प्यार पर रो कर ए कहने लगे। माँ, मैं संन्यासी तो हो गया किन्तु मेरा मन अभी स्थिर नहीं रहता है। "माँ ने धैर्य दिलाते हुए कहा ? यह आप की भूल नहीं घोर कलयुग का प्रभाव है घबराने की कोई बात नहीं है, आपके मन में भगवन्नाम के प्रति जो आस्था है, वह कभी निष्फल नहीं जा सकती। भगवान के नाम में वह अपार शक्ति भरी है जिसके सामने कलिकाल का प्रभाव नष्ट हो जाता है।" पूज्य श्री उड़िया बाबा जी महाराज, श्री स्वामी अखंडानंद

Scanned with CamScanner

जी महाराज, पटनावाले स्वामी श्री रामदास जी सब लोगों ने बड़े आदर से श्रीकृष्ण आश्रम में ठहरने का उचित प्रबन्ध कर दिया। महान सन्त-विभूतियों के साथ-साथ दो माह श्री बृन्दावन में ही रहे वहाँ से श्री स्वामी कृष्णानन्द जी अवधूत एम० ए० और रास-मण्डल के सहित भानुप्रताप थानेदार के पास आगरा होते हुए सन्त शिरोमणि बाबा रामदास जी (करह वाले) की यज्ञ में पहुँच गए। वहाँ पर जन समुदाय की अपार भीड़ थी। यज्ञ की पूर्णाहुति पर श्री स्वामी जी आगरा होते हुए फिरोजाबाद आ गए। वहाँ विशाल संकीर्तन-यज्ञ का आयोजन किया गया। उसी महोत्सव में बम्बई का विराट संकीर्तन मण्डल बुलाया गया।

फिरोजाबाद के आस-पास शिकोहाबाद, मैनपुरी, राजा साहब अवागढ़, राजा साहब लभौवा, राजा साहब जाटऊ वाले, सैकड़ों संकीर्तन मण्डल फिरोजाबाद में आए। उस समय स्वामी सर्वानन्द जी महाराज (खप्पर वाले बाबा) फिरोजाबाद के विशाल टीले पर रहते थे। इस महोत्सव में स्वामी श्री भजनानन्द जी महाराज आमंत्रित किए गए। श्री सत्यप्रकाशानन्द जी तथा स्वामी शिवानन्द जी आदि ने बहुत सहयोग दिया। यहीं पर स्वामी प्रेमानन्द इनके दर्शन किए और इन्हें गुरू मान कर इनके साथ-साथ संकीर्तन के प्रचार में अपना अमूल्य समय प्रदान किए! यज्ञ की समाप्ति के दिन बहुत बड़ा जुलूस निकाला गया। इसका इतना प्रभाव पड़ा कि आस-पास के गाँवों में संकीर्तन मण्डलों की

Scanned with CamScanner

स्थापना हो गई। गाँवों में लोग प्रातःकाल कीर्तन करते हुए प्रभात फेरियाँ करने लगे।

प्रातः जागरण, भगवन्नाम कीर्तन से मन को एक अपूर्व शान्ति मिलती है, दिन भर काम में मन लगा रहता है। आलस्य नाम मात्र को भी नहीं आता। प्रातःकालीन वायु अस्वस्थ को भी स्वस्थ बना देती है।

यज्ञ के समाप्त होते ही श्री महाराज जी महामण्डलेश्वर स्वामी सुकदेवानन्दजी, स्वामी भजनानन्दजी के शिकोहाबाद होने वाले महोत्सव में सम्मिलित हुए। स्वामी भजनानन्द और इनका परस्पर में बड़ा भारी प्रेम हुआ। शिकोहाबाद को यज्ञ के पश्चात् चूल्हावली ग्राम में सात दिन के अखण्ड संकीर्तन का आयोजन किया गया। बड़े ही स्नेह और भक्ति से लोगों ने इसे सफल बनाया। श्री महाराजजी यहाँ से पैदल-पैदल चलकर सवाँई ग्राम होते हुए बरहन आ गए। वहाँ पं० चोखेलाल जी ने बतलाया, "पूज्य श्री उड़िया बाबाजी, श्री हरि बाबा जी, स्वामी श्री अखंडानन्द जी, तथा श्री श्री आनन्द मयी माँ श्री कृष्ण आश्रम वृन्दावन पहुँच गए हैं। बड़ा सुन्दर उत्सव हो रहा है, रासलीला के समय प्रत्यक्ष श्री राधाकृष्ण जी के दर्शन हो रहे हैं। श्री स्वामी अखण्डानन्द जी श्री मद्भागवत के दशमस्कन्ध पर कथा कर रहे हैं।"

सुनते ही चित्त प्रफुल्लित हो गया। मन उमगा और पुनः वृन्दावन पहुँच गए। इस समारोह में श्री स्वामी

चक्रपांणि जी वेदान्ताचार्य, श्री आनन्द ब्रह्मचारी, श्री मस्तराम बाबा, श्री स्वामी आत्मानन्द जी, स्वामी श्री गोविन्ददासजी तथा ब्रह्मचारी श्री वासुदेवजी आदि महान विभूतियों के दर्शन हुए। यहीं पर गुरु जी श्री लालता प्रसाद जी ब्रह्मचारी, श्री मनोहर लाल एवं रास के ठाकुर जी श्री हरिगोविन्द जी आदि प्रियजनों के मिलने से इनका दिल खिल उठा, सभी लोग इन्हें प्राण के समान मानते थे। इनकी उदारता सर्वत्र प्रख्यात है। इनकी चंचलता को देख कर कभी-कभी लालता प्रसाद जी इन्हें प्यार से धमकाया करते थे, उन्हें ए बलराम भाव से देखते थे। आज भी सब लोग एक दूसरे से मिलते ही अपूर्वआनन्दानुभूति करते हैं।

❀ संन्यास आश्रम विलेपारले में ❀

बृन्दावन के उत्सव में श्री लाला वृजमोहनलाल बारा-बंकी वाले मिले, इन्हें बम्बई लिवा लाए। लोगों ने हठ कर के सत्संग भवन में ठहरने का प्रयास किया परन्तु स्वामी श्री अखिलानन्द जी तथा मोहनानन्द शास्त्री के अनुरोध पर विद्या वारिधि महामण्डलेश्वर श्री स्वामी महेश्वरानन्द जी के संन्यास आश्रम विलेपारला में पदार्पण किए। इस आश्रम में इन्हें अपूर्व सुख की अनुभूति हुई, पूज्य महामण्डलेश्वर जी ने अपने आश्रम में ही नहीं प्रत्युत अपने विशाल हृदय में भी स्थान दिया। श्री गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है—

नहिं दरिद्र सम दुःख जग माहीं।
सन्त मिलन सम सुख कछु नाहीं॥

स्वामी जी के प्रथम आगमन से ही आश्रम के सन्त-महात्मा, विलेपारला के प्रेमी भक्त जन बड़ी ही श्रद्धा से मिले। भक्ति महारानी की कृपा से सर्वत्र प्रेम का राज्य हो गया। ज्ञान और प्रेम का केन्द्र तो था ही महामंत्र जपने और भी वृद्धि कर दी। विरार से लेकर चर्च गेट तक के प्रेमी सज्जन पधारने लगे। पूज्य श्री महामण्डलेश्वर जी की आज्ञा से एक महीने के अखंड संकीर्तन की आयोजना की गई। ऐसे पुण्य अवसर पर तपोमूर्ति स्वामी श्री अखण्डानन्द

Scanned with CamScanner

जी (नासिक), महामण्डलेश्वर श्री स्वामी पूर्णानन्द जी (कनखल) महामण्डलेश्वर, श्री स्वामी प्रेमपुरी जी महाराज, न्याय व्याकरण वेदान्ताचार्य श्री स्वामी काशिकानन्द जी महाराज, विद्या वाचस्पति श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी एम० ए०, त्यागमूर्ति श्री स्वामी गणेशानन्द जी महाराज, न्याय व्याकरण वेदान्ताचार्य श्री ब्रह्मानन्द जी महाराज जो इस समय विले पारला संन्यास आश्रम के महामण्डलेश्वर हैं। आदि महात्माओं के सत्संग एवं सदपदेशों से मन के पाप धुल जाते थे। आज भी इन विभूतियों के दर्शन होते रहते हैं। आश्रम में प्रतिदिन प्रात. ६ से ८ और सायंकाल ६॥ से ७॥ तक ज्ञान की अनुपम धारा बहती रहती है। आश्रम के प्रांगण में संस्कृत महाविद्यालय तथा सुन्दर औषधालय बना हुआ है। व्याख्यान मन्दिर एवं प्रस्थापित मूर्तियों की छटा अवर्णनीय है।

Scanned with CamScanner

दक्षिण यात्रा

संन्यास आश्रम के महोत्सव के पूर्ण होते ही पूज्य श्री महा मण्डलेश्वर जी ने ज्ञान और भक्ति के प्रचार हेतु दक्षिण के सभी तीर्थ स्थानों की यात्रा का कार्य क्रम निश्चित किया। श्री स्वामी जी एवं अन्य बड़े बड़े महात्मा तथा कतिपय प्रेमी भक्तों के साथ वायुयान द्वारा प्रस्थान करके सर्व प्रथम मद्रास पहुँचे। इस राज्य के मदुरा जैसे प्रमुख स्थानों में, ज्ञान, प्रेम, भक्ति का श्रोत वहाते हुए श्री रामेश्वरम् आदि प्रसिद्ध तीर्थ स्थानों की यात्रा की। पूज्य महामण्डलेश्वर जी की दक्षिण-यात्रा नाम की पुस्तक छपी हुई है।

Scanned with CamScanner

ॐ श्री बद्रीनारायण की यात्रा ॐ

दक्षिण की यात्रा से वापस आकर बम्बई के कुछ प्रेमी भक्त जनों के आग्रह से पूज्य श्री महामण्डलेश्वर जी ने श्री बद्रीनारायण की यात्रा का निश्चय किया, यह यात्रा अपना अलग ही अस्तित्व रखती है। लगभग चार सौ गुजराती सज्जन बड़े २ सन्त, महात्मा और संकीर्तन मंडल से मिश्रित समुदाय, "हर हर महादेव एवं श्री बद्रीनारायण जी की जै,, बोलकर संन्यास आश्रम से प्रस्थान किया। विद्यार्थी मांगलिक श्लोकों का उच्चारण कर रहे थे। सभी अपने हृदय में यात्रा का उल्लास एवं भक्ति भावना भर कर पवित्र मार्ग पर अग्रसित हुए। नगर की गलियों में पुष्पों की वर्षा हो रही थी श्री महाराज जी के साथ मोहनानन्द जी शास्त्री भी थे। यात्रा की सुरक्षा का भार इन्हीं के ऊपर था। पर्वतारोहण के समय जिन चट्टियों पर यह दल विश्राम करता था वहाँ एक अलौकिक दृश्य दृष्टि गोचर होता था। श्री महा मण्डलेश्वर जी के मुखारविन्द से गिरिराज खण्ड की कथा सुनकर सब का हृदय प्रफुल्लित हो जाता था। सामूहिक संकीर्तन के समय हिमालय की कन्दराएँ एवं उपत्यकाएँ भी गा उठती थीं। अपनी पवित्र नगरी में अपने भक्तों की पुकार सुनकर कैलाशवासी का भी आसन हिल जाता था।

श्री बद्रीनारायण का दर्शन करके लौटते समय श्री महा मण्डलेश्वर जी अपने आश्रम कनखल (हरिद्वार) में ही विश्राम किए। श्री स्वामी जी, मोहनानन्द शास्त्री तथा अन्य प्रेमियों के साथ बरहन (आगरा) चले आए।

Scanned with CamScanner

बरहन में श्री विष्णु महायज्ञ

यों तो प्रारम्भ में ही बरहन में संकीर्तन महायज्ञ हो चुका था, परन्तु भगवत् भक्तों का हृदय भण्डार नाम से कब भर सकता है, ज्यों-ज्यों भजन करते जाँय मन की अभिलाषाएँ विशाल ही होती जाती हैं, बरहन के प्रेमी जन इनसे मिलकर बहुत ही हर्षित हुए, नर-नारियों का समुदाय अपने महान गुरु के चरणोदक हेतु दौड़ पड़ा। जिस प्रकार पिता अपने पुत्र की अभिलाषाओं की पूर्ति हेतु अन्त तक प्रयास करता है, उसी प्रकार एक गुरु भी अपने शिष्य की मनोंकामनाओं की सिद्धि के लिए कुछ भी नहीं रख छोड़ता। शिष्यों की प्रार्थना पर श्री महाराज जी ने पन्द्रह दिन का अखण्ड संकीर्तन तथा श्री विष्णु महायज्ञ का बड़े धूम-धाम से श्री गणेश किया। आस-पास के ग्रामवासियों ने अन्न-धन का ढेर लगा दिया। इस महोत्सव में अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य श्री शान्तानन्द जी महाराज, श्री बाबा राम दास जी ग्वालियर वाले, ब्रह्मचारी श्री प्रभुदत्तजी महाराज, श्री मंजुल जी व्यास, एवं अन्य बड़े-बड़े सन्तों ने पधार कर सदुपदेश एवं आशीर्वाद दिए। श्री स्वामी वेरिया वाले बाबा के साथ, टूँडला वाले बाबू गया प्रसाद जी, बाबू ज्योति प्रसाद जी, श्री जगदीशचन्द्रजी पालीवाल, नगलावेल से ठा० उमेद सिंह आदि सज्जनों ने पधारकर महान सहयोग प्रदान किया।

Scanned with CamScanner

❋ धर्मनगर की स्थापना ❋

बरहन में श्री विष्णु महायज्ञ की पूर्णाहुति बड़े ही सुन्दर ढंग से हुई। श्री स्वामीजी महाराज, स्वामी प्रेमानन्द जी, ब्रह्मचारी श्यामानन्द, मोहनानन्द जी शास्त्री सबके सब जौनपुर जिले में स्थित--धर्मनगर (भीलपुर) पहुँचे। यह धर्मनगर! वस्ती से दूर झाड़, झंखाड़ और साँप, विच्छुओं से पूर्ण भीलमपुर के श्री सत्यनारायण-रामभरोस, श्री द्वारिका प्रसाद-भगवती प्रसाद, श्री तुलसीराम-केदारनाथ एवं राधे-श्याम गुप्ता का आम का बगीचा है। सूर्यास्त के पश्चात् उसमें जाने का साहस नहीं होता था। ऐसे एकान्त निर्जन स्थान ही महात्माओं की तपोभूमि हुआ करती है। श्रीस्वामी जी के पदार्पण करते ही चारों ओर के ग्रामवासी नर-नारी उस बगीचे की ओर दौड़ पड़े। बाग की सफाई का भार अपने हाथों में ले लिया। फिर क्या था सफाई का अभियान ही प्रारम्भ हो गया। बहुत से आदमी एक साथ मिल कर काम करने लगे चार ही दिन में वह बगीचा नन्दन वन की तरह जगमगाने लगा। एक महीने का श्री हरिनाम अखण्ड संकीर्तन, श्री मद्भागवत की कथा अखण्ड श्री रामचरित मानस पाठ, श्री विष्णु महायज्ञ के साथ-साथ प्रतिदिन प्रातः एवं सायं कथा, कीर्तन, पदगान, बड़े-बड़े महात्माओं के सद्-उपदेश से यह बगीचा तीर्थ हो गया। जौनपुर और प्रतापगढ़

Scanned with CamScanner

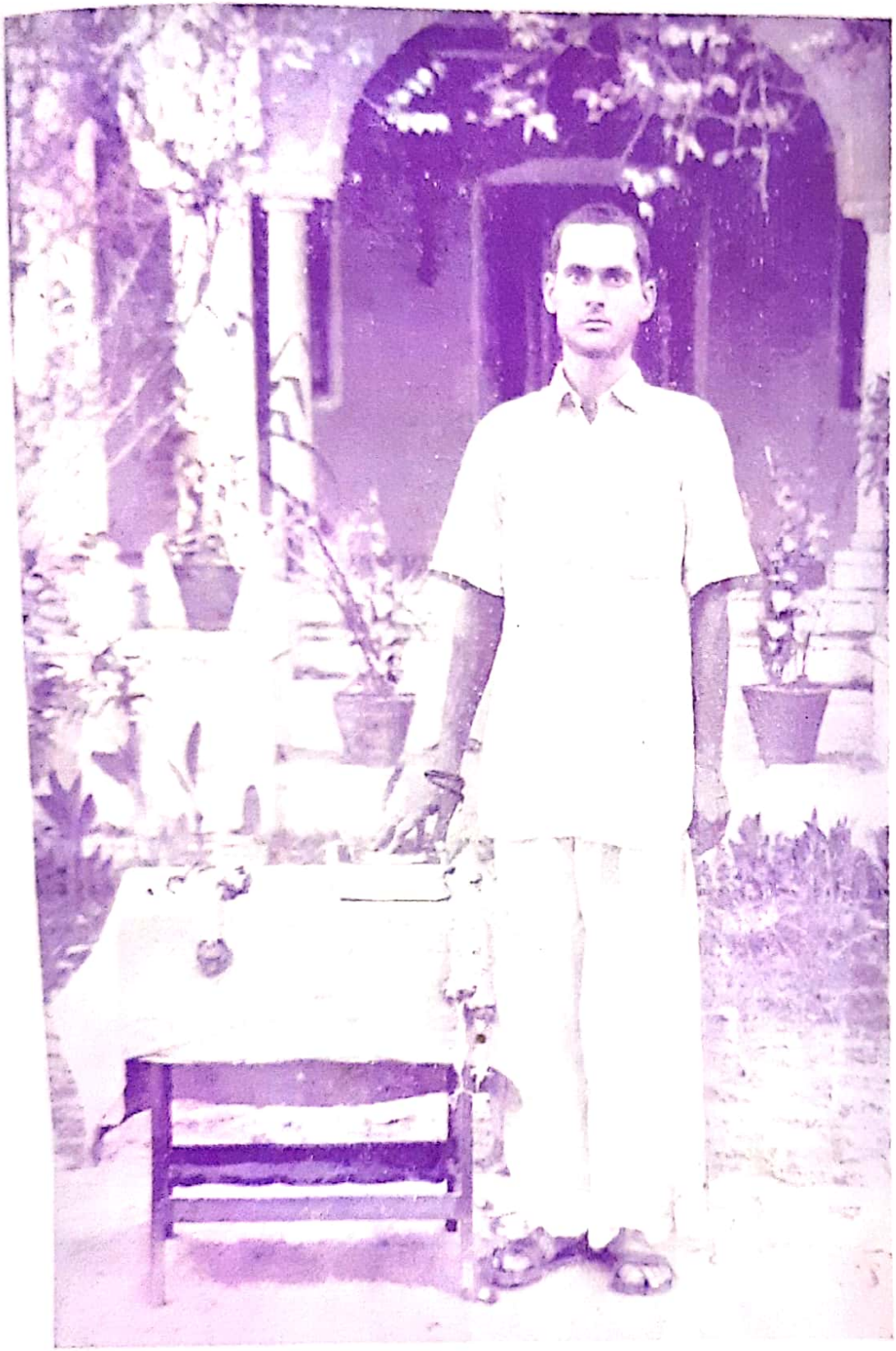

बाबू श्री अच्छे लाल जी के सुपुत्र बाबू श्री दया कृष्ण जी कुल श्रेष्ठ
(बरहन वाले) आगरा

Scanned with CamScanner

दोनों जिले के प्रेमी जनों का महान सहयोग प्राप्त हो रहा था। यह बगीचा अब धर्मनगर के नाम से प्रसिद्ध हो गया है। इसके अन्दर विशाल संकीर्तन भवन, पक्का यज्ञशाला, श्री महाराज जी की कुटिया, दो पक्के कुएँ बने हुए हैं। प्रवेश करते ही चित्त वृत्ति बदल जाती है। हृदय में प्रेम भक्ति का संचार हो जाता है। प्रतिवर्ष यहाँ एक महीने का विराट महोत्सव मनाया जाता है। नर-नारियों की अपार भीड़ अपने आराध्य देव के दर्शन से कृत-कृत्य हो जाती है। नौ करोड़ "ॐ नमः शिवाय" मंत्र और ११ करोड़ "श्रीराम जय राम जय जय राम" मंत्र का बैंक बना हुआ है।

दक्षिण, पूर्व में श्री हरिनाम का प्रचार

धर्मनगर की स्थापना करके श्री वासुदेव जी गुप्ता (फिरोजाबाद वाले) की प्रेरणा से श्री स्वामीजी महाराज अपने प्रिय शिष्यों के साथ श्री काशीजी और श्री वैद्यनाथ धाम होते हुए श्री जगन्नाथ पुरी के लिए प्रस्थान किए। पुरी से लौट कर कलकत्ता में संकीर्तन का बड़ा ही प्रचार हुआ। तत्पश्चात रायपुर, बिलासपुर, दुर्ग आदि जिलों में भक्ति का श्रोत बहाते हुए नागपुर पहुँच गए। यहां स्वर्गीय स्वामी श्री विद्यानन्द जी महाराज अहमदाबाद वाले के गीता मन्दिर में ठहरे। सम्पूर्ण नगर भर में संकीर्तन की धूम मच गई। प्रेमियों के आग्रह से कुछ समय तक यहाँ रहे। यहीं से स्वामी रामकृष्ण के आश्रम सिद्धिवन पहुँचे। यह सिद्धिवन जबलपुर के निकट पहाड़ में स्थित तपोभूमि है। एक तरफ पर्वत की विशाल उपत्यका और दूसरी तरफ नर्मदा जी की पवित्र धारा बह रही है। यहाँ की छटा अनुपम, चित्ताकर्षक एवं स्वर्गीय सुख देने वाली है।

सिद्धिवन में एक सप्ताह का अखण्ड संकीर्तन एवं श्री मद्भागवत की कथा का आयोजन किया गया। अपूर्व आनंद की वर्षा हो रही थी। सारा जन समुदाय आनन्द मग्न हो रहा था। यहाँ की समाप्ति के बाद श्री स्वामी जी अपने दल बल के साथ सहजपुर होते हुए शहपुरा भिटौनी पहुँचे। यहाँ एक वृहत यज्ञ का आयोजन किया गया। यहीं पर धर्माचार्य श्री स्वामी स्वरूपानन्दजी महाराज का दर्शन हुआ।

Scanned with CamScanner

श्री गुप्तेश्वर नाथ महादेवजी (चारुवा)

शहपुरा भिटौनी की यज्ञ समाप्त कर श्री स्वामी जी इटारसी, होशंगाबाद, नर्मदा जी के तट पर स्थित पवित्र भूमि हंड़िया पहुँचे। वहाँ की शोभा अलौकिक है, बगल में घोर जंगल, नीचे नर्मदा जी की निर्मल धारा, फल-फूल से पूरित महात्माओं का तप स्थान मन को अनायास ही आकर्षित कर लेता है। यहाँ के कुछ प्रेमी सज्जनों ने श्री स्वामी हीरापुरी जी महाराज के गुप्तेश्वरनाथ जी का परिचय दिया। इनके मन में श्री गुप्तेश्वरनाथ जी के प्रति अपार श्रद्धा हुयी, दूसरे दिन चारुवा पहुँच गए। वहाँ श्री महादेव जी का विशाल मन्दिर प्रकृति की गोद में स्थित है। कल-कल निनाद करती हुयी पर्वतीय सरिता, हरे-हरे फूलों से परिपूर्ण झाड़ियाँ पानी में मछलियों का विहार सहसा मन को मोह लेता है। श्री गुप्तेश्वरनाथ जी की विशाल मूर्ति पृथ्वी के गर्भ में स्थित है। प्रातः और सायं अपार भीड़ होती है। चारुवावासी श्री महाराज जी के आगमन को सुनकर प्रेम विभोर हो उछल पड़े। अपना काम काज छोड़ सेवा में लग गए, अन्न-धन से भण्डार भर दिए। श्री स्वामी हीरापुरी जी महाराज ने इन्हें हृदय से लगाया। श्री महाराजजी चातुर्मास यहीं पर व्यतीत किए।

Scanned with CamScanner

संन्यास आश्रम घाटकोपर बम्बई

चारुवा में चातुर्मास के समय ही श्री महाराज जी को पत्र व्यवहार द्वारा ज्ञात हो गया कि—राजाबाड़ी घाट—कोपर में स्थित श्री स्वामी अखिलानन्दजी महाराज का संन्यास आश्रम बनकर तैयार हो चुका है। इन दोनों महात्माओं में परस्पर स्नेह और प्यार है केवल शरीर ही दो है हृदय एक ही है। स्वामी अखिलानन्द जी ने बड़े प्रेम से आमंत्रित किया। श्री महाराज जी खण्डवा होते हुए संन्यास आश्रम घाट कोपर पहुँच गए। आश्रम में कथा कीर्तन, प्रवचन तो नित्य चल ही रहा था—पन्द्रह दिन के अखण्ड संकीर्तन का शुभारम्भ हो गया। इस समारोह में सुश्री बहन शान्ता देवी, सुश्री बहन लीलावती देवी पोद्दार श्री बनारसी लाल झुन-झुन वाले तथा उत्तर प्रदेश के बहुत से प्रेमियों ने महान सहयोग दिया। सम्पूर्ण कार्तिक के महीने भर एक अपूर्व दृश्य रहा। इस महोत्सव के समाप्त होने पर स्वामीजी, सेठ श्री महाबीर प्रसाद रुंगटा के आग्रह पर—रुंगटा हाउस नेपियन्सी रोड चले गए। वहाँ बीस, बाइस दिनों तक कथा कीर्तन होता रहा। आनन्द का भण्डार लुट रहा था। रुंगटा परिवार के सेवाओं की सराहना श्री महाराज जी सदैव किया करते हैं।

इसी समय बिड़ला की जन्मभूमि पिलाणी (राजस्थान) में श्री श्री आनन्दमयी माँ का संयम सप्ताह मनाया जा रहा

Scanned with CamScanner

था। माँ जी का आमंत्रण स्वीकार करके महामण्डलेश्वर श्री महेश्वरानन्द जी महाराज, त्यागमूर्ति श्री स्वामी गणेशानन्द जी महाराज, विद्यावारिधि स्वामी श्री अखण्डानन्दजी महाराज के साथ पिलाणीं चले गए। आठ-नौ दिन तक इस अलौकिक दुनियाँ में रहे। वहाँ से दिल्ली, मथुरा, आगरा होते हुए तीर्थराज प्रयाग पहुँच कर अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य श्री स्वामी शान्तानन्द जी महाराज के आश्रम ब्रह्मनिवास में ठहरे। श्री जगद्गुरु जी महाराज ने इन्हें बड़े आदर से बहुत ही सुन्दर स्थान में ठहराए। दोनों विभूतियों में आज भी परस्पर प्यार और स्नेह है। श्री शंकराचार्यजी महाराज की आज्ञा से बड़ा सुन्दर समारोह आयोजित किया गया। श्री गंगा-यमुना की इस पवित्र भूमि में बने हुए आश्रम की शोभा निराली है। इस आश्रम में परम भगवतभक्त श्री विश्वम्भरनाथ जी भार्गव "स्टैण्डर्ड प्रेस वाले" जिनके पुत्र श्री रावेश्वरनाथ जी अब भी अपनी सेवाओं का हद कर देते हैं। श्री स्वामी जी से मिले। इन्हें अपार हर्ष हुआ। इस भार्गव परिवार में सदा कथा, कीर्तन होता रहता है। सम्पूर्ण परिवार ही भगवान की सेवा में लीन रहता है। श्री शिवप्रसाद जी मिश्र (बब्बन) एवं राजमाता गजराज कुँवरि के विशेष आग्रह से श्री स्वामी जी कुछ काल तक गजराज भवन में ठहरे। राजमाता ने हृदय से स्वागत किया :—श्री स्वामी जी की अध्यक्षता में श्रीमद्भागवत की कथा और अखण्ड संकीर्तन का आयोजन किया गया। पुत्री श्री गीताकुमारी एम० ए०, श्री गायत्री कुमारी, लाल

Scanned with CamScanner

भगत सिंह एडबोकेट, श्री शाहजादा साहब सभी लोगों ने इनका बड़ा सम्मान किया। श्री शिवप्रसाद जी मिश्र एम० ए० "इन्हें बब्बन कहते हैं" श्री महाराज जी बब्बन का बड़ा प्यार करते हैं। स्वामी जी की आज्ञानुसार बड़ी-बड़ी सभाओं में स्वामी श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी श्री विवेकानन्द जी, स्वामी श्री रामतीर्थ जी के सद्उपदेशों का अंग्रेजी में बड़ा सुन्दर भाषण करते हैं। इन्होंने स्वर्गीय पंडित जवाहरलाल जी नेहरू की पुत्री महारानी श्रीमती इन्दिरा गांधी, महारानी श्री विजयलक्ष्मी पंडित, आनन्द भवन के श्री जगपति दुबे, श्री प्रभाकर जी, श्री आनन्द जी, स्वामी सन्त जी महाराज सभी का परिचय कराया। स्वामी जी का इन लोगों से बहुत बड़ा स्नेह है।

Scanned with CamScanner

माघ मेला तीर्थराज प्रयाग

बाबू सियाराम शर्मा (कानपुर वाले) बाबू उदयभान जी, बाबू दयाकृष्ण जी (बरहन वाले), राना साहब श्री केशवसिंह थानेदार, श्री हरिप्रसाद जायसवाल (झरियावाले) कर्नल साहब डा० श्री अव्यक्तानन्दजी आदि अनेक भक्तों के सहयोग से प्रतिवर्ष माघ मेले में श्री महाराज जी का बड़ा सुन्दर कैम्प लगता है। प्रति दिन बड़े-बड़े महात्माओं के प्रवचन, कथा, रासलीला एवं अखिल भारतीय श्री राधाकृष्ण संकीर्तन मण्डल के द्वारा अखण्ड संकीर्तन, पदगान होते रहते हैं। इस संकीर्तन मण्डल के अध्यक्ष स्वर्गीय श्री स्वामी नारायण (शाहिनाथ) जी थे। प्रबन्धक ब्रह्मचारी भवानीरण (भगत जी व्यास हैं। श्री गुरु प्रसाद, श्री गायत्रीप्रसाद, श्री सत्य नारायण, श्री हरिश्चन्द्र, श्री ईश्वरदत्त, श्री राजमूरतिसिंह, श्री रामयज्ञ पाण्डेय आदि संकीर्तन के कलाकार एवं विशेष कार्यकर्त्ता हैं। इनकी सुमधुर भजनें सहसा जनता जनार्दन के मन को अपनी ओर आकर्षित कर लेती हैं। माघ मेले में भारत के बड़े-बड़े प्रसिद्ध सन्त महात्माओं के कैम्प लगते हैं। महामण्डलेश्वर श्री स्वामी भजनानन्द जी महाराज, शिव-कोटी वाले श्री नारायण महाप्रभुजी श्री अयोध्याजी नारायण आश्रम स्वामी श्री सनकानन्द जी, आदि बड़े-बड़े महात्माओं के शिविरों में श्री महाराज जी समय-समय पर अपने संकीर्तन मण्डल के साथ पधारते रहते हैं।

Scanned with CamScanner

कलकत्ता की यात्रा

स्वामी प्रेमानन्द, मोहनानन्द शास्त्री और कई भगवत भक्तों के साथ कलकत्ता के लिए प्रस्थान किए। रास्ते में स्वामी रामदास जी के यहाँ पटना में ठहरे। यहीं पर श्री उड़िया बाबाजी के नाम से बड़ा विशाल सत्संग भवन बना हुआ है। पाँच, सात दिन तक समय-समय पर भगत जी व्यास की कथा, अखण्ड संकीर्तन बड़े ही धूमधाम से होता रहा। एक अलौकिक आनन्द बरस रहा था। इसके पश्चात् झरिया पहुँचे वहाँ पर श्री जैनगर जायसवाल जी हरीप्रसाद जायसवाल, बाबू बैजनाथ, श्री देवी प्रसाद जी, श्री प्यारेलाल जायसवाल ने बड़ी श्रद्धा से ठहराया, झरिया में श्री भगवन्नाम संकीर्तन की धारा बह चली, वहाँ से श्री महाराज जी आसन-सोल गए। श्री जगतपाल सिंह, श्री समर बहादुरसिंह अपार श्रद्धा से इनका स्वागत किया। यहीं पर श्री श्री आनन्दमयी माँ के कई भक्त इनसे मिले। श्री सीताराम, ओंकारनाथ के बहुत से बंगाली मित्र भी इनका दर्शन किए। वहाँ पर दर्शनार्थियों की हमेशा भीड़ सी लगी रहती थी। यहीं से कलकत्ता पहुँच गए। तिवारी ब्रदर्स श्री बनवारीलाल जी ने अपने यहाँ बड़ा बाजार में बड़े आदर से ठहराया और स्वागत सम्मान किया। साधु सन्तों के शुभ आशीर्वाद से, भगवत् कृपा से तिवारी ब्रदर्स सपरिवार फलफूल रहे हैं। इन्हीं के

बहुत बड़े सहयोग से अहमदाबाद वाले स्वामी श्री कृष्णानन्द जी महाराज महामण्डलेश्वर का कई लाख का नया सत्संग भवन बनकर तैयार हो गया है। तिवारी ब्रदर्स के यहाँ से श्री जयदयाल जी गोयनका के स्थापन किए हुए श्री गोविन्द भवन कार्यालय में लगभग पन्द्रह दिन तक रहे। संकीर्तन सत्संग का बड़ा सुन्दर कार्य क्रम रखा गया। भगवत भक्तों को बड़ा ही सुख प्राप्त हुआ।

धर्मनगर बगीचा के अधिकारी श्री रावेश्याम गुप्त, पं० लक्ष्मीनारायण जी, श्री रामराज जी, श्री तीर्थराज, पं० बासुदेव, सरायमधई प्रतापगढ़ वाले पं० रामदास, श्री बद्री नारायण, पं० रामभरोस आदि सभी लोग जो बड़ा बाजार से १२ मील दूर श्री गंगा जी के तट पर रहते हैं, इनके ईंट के बड़े-बड़े कारखाने हैं। सभी को यह ज्ञात हो गया कि हम लोगों के प्राण संकीर्तनाचार्य स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज कलकत्ता बड़ा बाजार में पधारे हुए हैं। बड़े ही आदर से इन्हें अपने यहाँ लिवा लाए। यहाँ की पवित्र तपोभूमि श्री महाराज जी को बहुत ही प्रिय लगी। श्री गंगा जी के पावन तट पर ही रहने का निवास स्थान बनवा दिए। यहीं पर महाराज श्री चातुर्मास व्रत किये।

इस चातुर्मास व्रत के समय जिला सुल्तानपुर बिलहरी ग्राम के बाबू श्री सान्ता प्रसाद सिंह, बाबू हरिहरप्रसाद सिंह, स्वर्गीय पं० रामसन्मुख तिवारी की धर्मपत्नी ईश्वराजीदेवी, जिनका नाम लक्ष्मी देवी है। इनका कई लाख रुपए का ईंट का कारखाना है जो लक्ष्मी ब्रिक-फील्ड के नाम से प्रसिद्ध

है। इनके दो पुत्र पं० प्रसिद्ध नारायण, बाबू प्रेमनारायण, बाबू प्रयाग नारायण, पाठक गुप्ता कम्पनी, दुबे एण्ड कम्पनी आदि सभी प्रेमियों के आग्रह से एक महीने का अखण्ड संकीर्तन कथा, प्रवचन का विशाल आयोजन किया गया। कई हजार रुपया व्यय करके बड़ा ही भव्य वर्षाती सत्संग पंडाल बनाया गया। कथा, प्रवचन में अपार नर-नारी उपदेशमृत पीने के लिए विह्वल होकर खिंचे आने लगे।

सब लोगों ने महाराज से प्रार्थना करके धर्मनगर से अखिल भारतीय श्री राधाकृष्ण संकीर्तन मण्डल बुलाया। इसी महोत्सव में होलीपुरा जिला आगरा के पं० मणींराम शास्त्री, डाक्टर साहब श्री रमेशचन्द्र जी, डा० श्री राज रानी आए इन लोगों के परिचय से होली पुरा के बहुत से भक्त श्री महाराज जी से मिले और महोत्सव में बहुत बड़ा सहयोग प्रदान किए। बिठौली ग्राम के बाबू श्री नरसिंहदास जी श्रीवास्तव, बाबू श्री बलवीर जी श्रीवास्तव एवं कलकत्ता के बहुत बड़े सेठ जी श्री गौरीशंकर जी बिहानी आदि ने बहुत सा धन देकर इस यज्ञ को सफल बनाए और सदा के लिये महाराज जी के कृपा पात्र बन गए।

श्री स्वामी जी महाराज रामकृष्ण परमहंस, श्री श्री चैतन्य महाप्रभु, श्री श्री आनन्द मयी माँ जी, श्री सुभाष चन्द्र जी बोस को अपना आराध्य देव मानते हैं। इसलिए बंगालियों की इनके प्रति बहुत बड़ी निष्ठा हो गई। उत्सव की समाप्ति पर कई हजार बंगालियों की कुँमारी कन्याओं को भोजन कराया गया।

श्री नवद्वीप धाम की यात्रा

बंगाली सुधीर बाबू, बाबू खांदू चरन एवं बाबू भूतनाथ नस्कर के आग्रह से श्री महाराज जी अपने संकीर्तन मण्डल और बहुत से प्रेमी भक्तों के साथ श्री श्रीचैतन्य महाप्रभुजी की जन्मभूमि नवद्वीप के लिए प्रस्थान किए। साथ में लगभग पचास-साठ प्रेमी सज्जन थे। वहाँ पहुँचते ही सबका हृदय भक्ति प्रेम से भर गया। प्रत्येक मन्दिरों में असंख्य नर नारी निरन्तर श्री भगवन्नाम संकीर्तन करते रहते हैं। सात-आठ दिन रहकर फिर कलकत्ता वापस चले आए। श्री दौलतराम पुरोहित नवलगढ़ वाले पं० रामकुमार जी रसमई (मथुरा), कमला शंकर पाण्डेय सवेली वाले, एवं श्री माता प्रसाद पाण्डेय इन सब लोगों ने श्री महाराज जी की बड़ी सेवा की।

Scanned with CamScanner

आगरा में नवदुर्गा महोत्सव

कलकत्ता पहुँचते ही आगरा वालों के तार एवं पत्र प्राप्त हुए, जिसमें प्रोफेसर साहब श्री मुन्नाराम शर्मा, बरहन वाले श्री बाबू रघुबीर किशोर जी कुलश्रेष्ठ, बाबू श्रीश्याम स्वरूप कुलश्रेष्ठ, इन्जीनियर साहब जी ब्रजपाल सिंह, बाबू अमरनाथ जी मैनेजर इण्डियन प्रेस इन सब लोगों ने नवरात्र का महोत्सव आगरा में मनाने की प्रार्थना की थी। स्वामी जी आगरा पहुँच गए, नवदुर्गा महोत्सव प्रारम्भ हो गया।

अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु श्री शंकराचार्य स्वामी श्री शान्तानन्द जी महाराज, करहल वाले परमपूज्य बाबा श्री रामदास जी महाराज, स्वामी प्रेमानन्द जी सभी इस समारोह में पधारे। इनके उपदेशों से जनता जनार्दन को अलभ्य लाभ हुआ। महोत्सव में प्रतिदिन ब्रह्मचारी श्री भगत जी व्यास एवं श्री वल्लभाचार्य सम्प्रदाय के श्री श्याम महाराज जी की मनोहर कथा होती थी।

Scanned with CamScanner

॥ होलीपुरा, विठौली में सत्संग समारोह ॥

नवदुर्गा महोत्सव की पूर्णाहुत, हवन, ब्रह्मभोज करके दशहरा को पूज्य श्री स्वामीजी महाराज अपने परिकर के साथ आगरा से होलीपुरा के लिए प्रस्थान किये। वहाँ पर अनन्त श्री विभूषित स्वामी श्री हरिहरानन्द जी के विशाल आश्रम में ठहरे। सात दिन का बहुत बड़ा सत्संग समारोह रक्खा गया। होलीपुरा के समस्त नर नारी बड़ी ही श्रद्धा भक्ति से स्वामी जी की सेवा की भगवान के भण्डार में अपार अन्न-धन एकत्र हो गया।

याही रस में रहत मगन, न जाने निशिभोर।
वृन्दावन में, प्रेम की नदी बहे चहुँ ओर॥

बड़े ही सुन्दर ढंग से महोत्सव सम्पन्न हुआ बाबू जी नरसिंह दास जी, पं० श्री जगदीशचन्द्र और भी कई प्रेमियों ने बड़े ही आग्रह से श्री महाराज जी को अपने ग्राम बिठौली ले गए। ग्राम के पास ही श्री यमुना जी के तट पर स्वामी श्री ददुवा बाबा जी के आश्रम का दर्शन किए। बिठौली में पाँच दिन का संकीर्तन समारोह प्रारम्भ हुआ। वहाँ से विदा होते समय, समस्त ग्राम के नर नारी प्रेम विभोर हो फूट-फूट कर रोने लगे।

महोत्सव समाप्त कर के सब के सब बमरौली कटारा आए। इसके पहले श्री महाराज जी इस ग्राम में महीनों

Scanned with CamScanner

अखण्ड संकीर्तन का प्रोग्राम रख चुके थे। इस समय थोड़ा ही समय देकर बरहन जज साहब के बगीचा में आए। यहाँ पर श्री लक्ष्मी पूजन दीपावली कर के सवाँई ग्राम में बाबू श्री जगदीश चन्द्र जी पाली वाल के यहाँ पधारे। यहाँ प्रति वर्ष परम पूज्य श्री उड़िया बाबा जी महाराज का बहुत बड़ा महोत्सव मनाया जाता है।

Scanned with CamScanner

"जन्म भूमि बिलवार में संकीर्तन भवन"

जिला आगरा बमरौली कटारा ग्राम के डा० राम सिंह राना के सुपुत्र श्री केशव सिंह राना की धर्म पत्नी सुश्री महरानी देवी के आग्रह से बिलवार ग्राम में विशाल संकीर्तन भवन सन् १९६४ ई० में बन कर तैयार हो गया। इसके निर्माण में श्री महाराज जी के सभी प्रेमी भक्तों ने धन का सहयोग दिया है।

यह संकीर्तन भवन स्वामी कृष्णानन्द इण्टर मिडिएट कालेज के प्रांगण में स्थित है। इस भव्य भवन में भारत के प्रसिद्ध सन्त-महात्मा एवं श्री महाराज जी के भक्तों के सुन्दर-सुन्दर चित्र लगे हुए हैं। इसकी अनुपम छटा का दर्शन होते ही हृदय, श्रद्धा-भक्ति से भर जाता है। इस संकीर्तन भवन के उद्घाटन के शुभ अवसर पर एक माह का अखण्ड संकीर्तन श्री विष्णु महायज्ञ तथा श्री वृन्दावन धाम की प्रसिद्ध रास मण्डली द्वारा प्रति दिन श्री कृष्ण भगवान की पावन लीलाओं के दिग् दर्शन से जनता जनार्दन को नैसर्गिक सुख का अनुभव होता था। भवन के सामने ही श्री हनुमान जी का बड़ा ही सुन्दर मन्दिर बना हुआ है, जहाँ प्रति वर्ष श्रावण के महीने में मंगलवार को विराट मेले का आयोजन होता है।

इनकी अलौकिक प्रतिभा से आकृष्ट हो कर उदार

Scanned with CamScanner

हृदय श्री स्वामी प्रेमानन्द जी मैनपुरी, श्री स्वामी शिवानन्द जी सहस पुर, स्वामी रामानन्द, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी प्रकाशानन्द (आलमपुर हौद, इटावा) आदि बहुत से भक्तों ने अपने को इनके चरणों में समर्पित कर दीक्षा ले संन्यासी हो गए, । और भगवन्नाम का प्रचार करते हुए संसार का कल्याण कर रहे हैं ।

माघमेला श्री तीर्थराज प्रयाग में पतित पावनी, कलि मल हारिणी, श्री गंगा जी, श्री यमुना जी के पवित्र संगम त्रिवेणी तट पर, धारीपुर वाले स्वामी महादेवानन्द जी एवं पवित्र ब्राह्मण कुल भूषण स्वामी गोकुला नन्द जी संन्यास की दीक्षा ग्रहण किए ।

Scanned with CamScanner

—: संकीर्तना चार्य :—

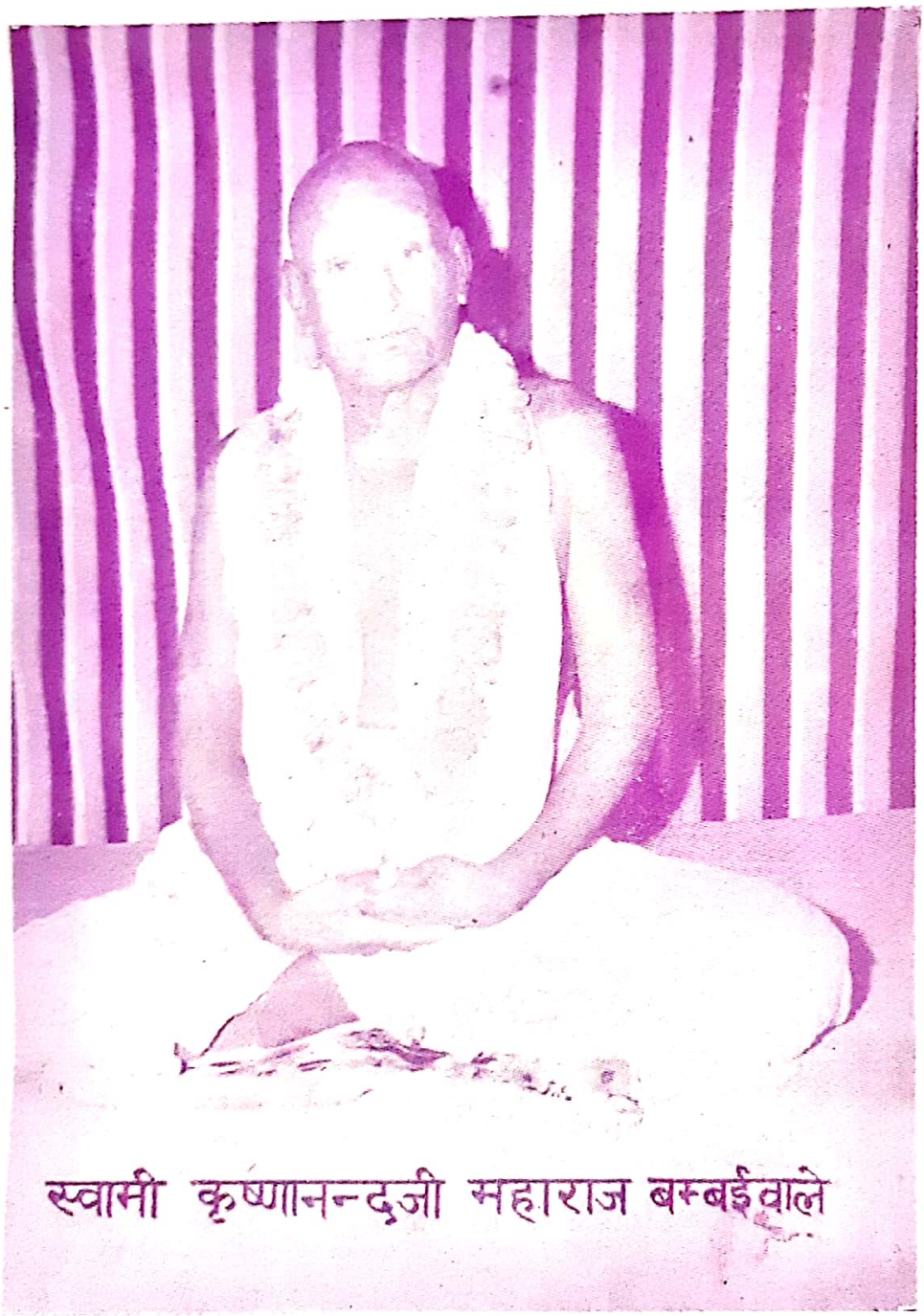

स्वामी कृष्णानन्दजी महाराज बम्बईवाले

Scanned with CamScanner

॥ श्री गीता आश्रम देहली में चातुर्मास व्रत ॥

जुलाई सन् १९७३ ई० में परम पूज्य श्री स्वामी जी महाराज, श्री शिव प्रसाद मिश्र एवं श्री आनन्द प्रताप सिंह जी के आग्रह से बम्बई से वायुयान द्वारा, श्री गीता आश्रम-देहली कैन्ट में पधार कर चातुर्मास व्रत सानन्द सम्पन्न किए। इस पुण्य अवसर पर अखण्ड श्री भगवन्नाम संकीर्तन् अखण्ड श्री रामचरित मानस पाठ, श्री भद्भगवत् गीता पारायण श्री हनुमान चालीसा का निरन्तर पाठ चल रहा था। कथा, प्रवचन, सद् उपदेश से प्रेमी भक्त जन आनन्दित थे। तन, मन, धन से इस पवित्र अनुष्ठान में सहयोग प्रदान कर अपने को कृत-कृत्य कर रहे थे।

परम पूज्य श्री हरिहर जी महाराज द्वारा स्थापित यह गीता आश्रम अपनी अद्भुत कीर्ति सारे विश्व में प्रसारित कर रहा है। आश्रम की विशालता एवं रमणीयता दर्शक के मन को अनायास ही अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। श्री राधाकृष्ण भगवान के दिव्य विग्रह एवं श्री हनुमान जी के विराट स्वरूप के संस्थापन से आश्रम की शोभा अवर्णनीय है। समय-समय पर भगवान के शृंगार की निराली झाँकी के दर्शन होते रहते हैं। यह गीता आश्रम, श्री महाराज जी को कल्पवृक्ष का फल दे रहा था।

—: सदा दिवाली सन्त की, :—

कहावत इनके पवित्र जीवन में अक्षरशः चरितार्थ होती है। "नगर-नगर, ग्राम-ग्राम, हरेकृष्ण, हरेराम" की मंगल ध्वनि का प्रसारण ही इनका मुख्य लक्ष्य है। नित्य प्रति अखण्ड संकीर्तन, अखण्ड रामायण पाठ, श्री मद्भागवत सप्ताह दुर्गा सप्तसती पाठ, श्री भद्भगवत गीता पारायण आदि कार्य क्रमों का आयोजन रहता है। कथा, प्रवचन, पदगान आदि से ज्ञान, भक्ति, प्रेम की त्रिवेणी प्रवाहित होती रहती है। इस पवित्र संगम में निमज्जित भक्त समुदाय अपने त्रय तापों से विमुक्त हो जाता है।

श्री महाराज जी के त्याग-वैराग्य, जप-तप, संयम-नियम, सरलता-दयालुता से प्रभावित हो असंख्य नर-नारी भगवत् भक्त गुरु दीक्षा ग्रहण कर शिष्य हो गए। जहाँ कहीं सत्संग समारोह आयोजित होता है, स्नेह की धारा फूट पड़ती है। विरला ही ऐसा होगा जिसके हृदय पर इनके प्रभाव की अमिट छाप न पड़ती हो। इनके क्षण मात्र के दर्शन से मनुष्य अपने को भूल जाता है। फल स्वरूप आज भारत वर्ष के कोने-कोने में श्री भगवन्नाम की पवित्र ध्वनि गूँज रही है।

ऐसे महापुरुष ! जिनके आदर्श मय जीवन एवं करुणा दृष्टि से इस धार्मिक जगत में इतना महान आध्यात्मिक

Scanned with CamScanner

उपकार हो रहा है उनके मार्मिक, सांकेतिक एवं सरल उपदेशों को हृदयंगम कर अपने भौतिक जीवन को सुख शान्ति मय बनाएं, श्री सद्गुरु देव जी के प्रति यही हमारी सर्वोतम आराधना है।

इसी भावना से ओत-प्रोत यह श्रद्धासुमन प्रभु के कमल चरणों में सादर समर्पित है।

सर्वंभवन्तु सुखिनः सर्वं सन्तु निरामयाः।
सर्वं भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्॥

——: इति शुभम् :——

दान दाताओं की नामावली

जो दानबीर संकीर्तन भवन, माघ मेला प्रयाग, एवं चातुर्मास व्रत में अन्न-धन से सहयोग दे रहे हैं, उनके नाम अंकित किए जा रहे हैं।

सुश्री लक्ष्मी देवी शर्मा
लक्ष्मी ब्रिक फील्ड-कलकत्ता

श्री सान्ता देवी शर्मा
C/o बाबू जी गयाप्रसाद जी
टूंडला

सु श्री महरानी देवी
C/o पुलिस इन्सपेक्टर केशव सिंह राना।

सु श्री कृष्ण कान्ता देवी
C/o श्री वासुदेव बाबू
फिरोजाबाद

सु श्री गुलाब देवी
C/o श्री राम बहादुर गुप्ता
फिरोजाबाद

सु श्री राम बेटी
C/o श्री राम बाबू सूरजभान
गुप्ता माथुर वैश्य-फिरोजाबाद

सु श्री सरस्वती देवी
लालबाग बम्बई

सु श्री बहन जी लीलावती
देवी पोद्दार समुद्र का तट
निपियान्सी रोड बम्बई

सुश्री अनार देवी बम्बई

सुश्री राधारानी
C/o बाबू उदयभान जी
कुलश्रेष्ठ (बरहन)

सुश्री सुषमा देवी
C/o बाबू कामता प्रसाद गुप्ता
कलकत्ता।

सुश्री ब्रह्मा देवी शर्मा
C/o बाबू श्री राम सहाय
दीक्षित फिरोजाबाद

सुश्री इन्दु प्रभा देवी
C/o बाबू श्री नर्मदेश्वर प्रसाद
काशी जी

सुश्री नीरा कुल श्रेष्ठ
c/o बाबू सुरेश चन्द्र (कुल-श्रेष्ठ) सीतापुर।

सुश्री हीरा शर्मा
c/o बाबू श्री गोपाल कृष्ण
(फ्लाइट लेफ्टीनेन्ट-बम्बई)

सुश्री गीता कुमारी एम० ए० पी०एच०डी० गजराज भवन
इलाहाबाद।

सुश्री लक्ष्मी देवी
c/o बाबू सियाराम शर्मा
कानपुर।

सुश्री रतनेश कुमारी शुक्ला
c/o बाबू सुरेश चन्द्र शुक्ला
उन्नाव।

सुश्री डा० राज रानी
c/o डाक्टर श्री रमेश चन्द्र शर्मा होली पुरा।

सुश्री शशि देवी (जायसवाल)
c/o यज्ञ नारायण जायसवाल
झरिया।

सुश्री मंशाबाई
c/o श्री हरी राम बाबू
लाहोटी कलकत्ता

सुश्री रमराजी देवी
c/o श्री रामराज जी मिश्र
घास बाजार बम्बई।

सुश्री केलिको देवी पाण्डेय
होली पुरा।

सुश्री रामदेवी
होली पुरा

सुश्री सुशीला देवी
c/o श्री भीकू लाल जी
(गोयनका) अकोला-(महा-राष्ट्र)।

सुश्री चन्द्र मुखी देवी
c/o बाबू श्री गिरीश चन्द्र
पब्लिक सर्विस कमीशन
इलाहाबाद।

सुश्री देवकी देवी शर्मा
c/o श्री त्रिलोकी नाथ शर्मा
फिरोजा बाद

सुश्री बहन जी श्री जय देवी
c/o श्री लक्ष्मी नारायण जी
जारखी (आगरा)

सुश्री धर्म वती त्रिपाठी
कलीचाबाद, जौनपुर

सुश्री सान्ता देवी चौधरी
c/o बाबू गोविन्द सिंह एडवोकेट बुलन्दशहर।

Scanned with CamScanner

सुश्री हर्षवती देवी
c/o इन्जीनियर साहब बाबू
ब्रजपाल सिंह आगरा।

सुश्री शकुन्तला देवी
c/o बाबू श्री रघुवीर किशोर
(बरहन वाले) आगरा।

सुश्री कमलेश कुमारी
c/o श्री अवधेश प्रसाद जी
सारस्वत (वृन्दाबन)

सुश्री त्रिवेणी देवी (भक्ती-
गढ़ी) टूंडला।

सुश्री प्रेमवती बेटी
c/o बाबू रामनारायण गार्ड
टूंडला।

सुश्री ऊषा रानी झुन-झुन वाले
c/o श्री मोती लाल
पद्मपति कानपुर।

सुश्री श्यामा देवी चौधरी
c/o बाबू निरंजन सिंह चौधरी
मथुरा कैन्ट।

श्री पुष्प लता सिंह
c/o डा० शिवमूरति सिंह
कलकत्ता।

सुश्री कृष्णकान्ता बेटी
c/o प्रोफेसर श्री मुन्ना लाल
शर्मा बरहन (आगरा)

सुश्री सुशीला देवी
c/o श्री विजय नारायण
अग्रवाल इटावा।

सुश्री सान्ता बहन पीती c/o
राजा साहब श्री गोविन्द
लाल पीती (बम्बई)

सुश्री श्याम वती देवी
c/o बाबू गौरी सहाय जी
बदायूँ।

सुश्री शीला देवी
c/o बाबू हीरासिंह सिरोही
पुलिस इन्सपेक्टर-मड़वा
(अलीगढ़)

सुश्री धनवन्ती देवी
c/o श्री गया प्रसाद पाण्डेय
गारापुर-प्रतापगढ़।

सुश्री अंगूरी देवी
c/o श्री शम्भू नाथ गुप्ता
आगरा।

सुश्री पुण्य वती देवी
c/o श्री सूर्यमणि मिश्रा
बम्बई।

सुश्री आशा देवी c/o श्री
राधेश्याम शर्मा मौडिल
टाउन-दिल्ली।

सुश्री विद्यावती देवी c/o श्री
रवि दत्त जी मिश्रा
तिमारपुर-दिल्ली।

श्री मत् परम हंस परिव्राजका
चार्य

स्वामी श्री अखिलानन्द जी
महाराज संन्यास आश्रम
घाटकोपर बम्बई।

बाबू जी श्री दया कृष्ण जी
कुलश्रेष्ठ बरहन वाले (आगरा

श्री महादेव, धर्मराज आरो-
ड़कर साहब दादर बम्बई।

श्री बाबू राम देसाई
दादर-बम्बई।

श्री शिवप्रसाद जी मिश्रा
रामनगर प्रतापगढ़।

बाबा श्री शिवनाथ प्रसाद
मिश्र शिवनाथ भवन प्रतापगढ़

श्री बनारसी लाल झुन-झुन
वाले बम्बई।

श्री केदारनाथ हनुमान प्रसाद
कम्पनी बम्बई।

सेठ जी श्री गौरी शंकर जी
विहानी कलकता।

बाबू श्री नरसिंह दास जी
श्रीवास्तव कलकत्ता

बाबू श्री बनवारी लाल जी
तिवारी ब्रदर्स बड़ा बाजार
कलकत्ता।

श्री राजमणि जी बाजार गेट
बम्बई।

पं० बद्री प्रसाद जी शर्मा
मिठाई की दुकान बम्बई।

श्री अमृत लाल जी मिश्रा
बनारसी स्वीट मार्ट खार
बम्बई।

श्री कमला प्रसाद तिवारी
घास बाजार बम्बई।

ब्रह्मचारी जी श्री सोमनाथ
c/o पूज्य श्री स्वामी अभया-
नन्द जी महाराज
श्री नर्मदा जी का तट।
ओंकारेश्वर महादेव।

Scanned with CamScanner

पं० रामचन्द्र दुबे (परमा का पूरा)

पं० माता सरन शुल्क परमा का पूरा।

पं० गायत्री प्रसाद जी मास्टर धारीपुर

पं० गुरु प्रसाद जी मास्टर प्रेम का पुरा।

पं० राम खेलावन दुबे प्रेम का पुरा।

पं० गुरु प्रसाद जादूगर प्रेम का पुरा

पं० सत्य नारायण जी उपाध्याय धारी पुर।

पं० विनय कुमार, राम सूरत उपाध्याय धारीपुर

पं० हरिशचन्द्र उपाध्याय धारीपुर

पं० ब्रह्मदत्त जी मिश्रा धारीपुर।

पं० श्री राम अक्षैवर मिश्र नारायणपुर

पं० हीरा राम के सुपुत्र श्री हरिहर प्रसाद जी नारायण पुर।

पं० रामराज जी व्यास नारायणपुर।

पं० उदय कान्त जी व्यास नारायणपुर।

पं० जवाहरलाल, कमला प्रसाद पाण्डेय। सवेली।

पं रामनाथ जी उपाध्याय डालूपुर।

ठा० राजमूरत सिंह डालूपुर।

अनन्त श्री विभूषित श्री रामानुजा चार्य पीठा धीश्वर परमपूज्य श्री देवनायका चार्य जी धारीपुर।

व्यास सम्राट श्री ब्रजभूषण जी महाराज धारीपुर।

सेठ श्यामा चरण जी (लाले) बालवरगंज जौनपुर।

श्री रामकुंजन शुक्ल बभनियाँव।

श्री केदारनाथ मिश्र चकला स्ट्रीट बम्बई।

श्री कृष्ण देव जी पाण्डेय बासूपुर आजमगढ़।

श्री कृष्णबीर सिंह जी बिचपुरी आगरा

बाबू श्री रमेश चन्द्र सिनहा नया अलीपुर कलकत्ता

मेसर्स राम अधार, नाथूराम अग्रवाल किराना व्यापारी जुन्नार म० प्र०

पं० श्री गिरिजा शंकर शुक्ल डी० आई० एस० मिल्स फरूखाबाद।

श्री गेंदा लाल पाठक लोको रोड जबलपुर

श्री ग्यासी राम राना बमरौली कटारा आगरा

श्री गोपाल चन्द्र वकील तेल मिल वाले फिरोजाबाद।

श्री गणेश प्रसाद सेठ अहमदाबाद।

श्री गनपत चतुर्वेदी। कुर्ला बम्बई।

चन्द्र भूषण जी मिश्र पार्सल-क्लर्क कानपुर।

पं० चन्द्रिका प्रसाद जी मास्टर इटावा।

पं० जमुना प्रसाद पाण्डेय विलवार।

श्री जयनगर जायसवाल झरिया

बाबू श्री ज्योति प्रसाद जी रईस टूंडला।

बाबू ज्योती प्रसाद, राम प्रकाश फिरोजाबाद

पं० जगदीश चन्द्र जी बिठौली (आगरा)

श्री जुगल किशोर (भावसार-क्षत्रिय) चारुवा होसंगाबाद

श्री जगदीश चन्द्र प्रसार अध्यापक बदायूं।

बाबू जगन्नाथ प्रसाद जायसवाल आयल मिलवाले इलाहाबाद।

Scanned with CamScanner

श्री राधेश्याम, मेडिकल स्टोर्स बालवरगंज

श्री तिलकधारी सिंह (गुवावां)

श्री दौलत राम पुरोहित गौहाटी आसाम

सेठ जी द्वारिका प्रसाद जी गुप्ता धर्मनगर।

पं० दूध नाथ जी मिश्र विक्रोली बम्बई

श्री घी रूभाई घाट कोपर बम्बई।

श्री रामनारायण राजावड़ी बम्बई

पं० नत्थी लाल अध्यापक अहारन (आगरा)

श्री नर्मदा प्रसाद तिवारी किला वाले हड़िया होशंगाबाद

श्रीनन्द किशोर तिवारी हड़िया होशंगाबाद

श्री नारायण स्वरूप मेहरोत्रा इलाहाबाद।

पं तीर्थ प्रसाद जी उपाध्याय धारीपुर

पं० लक्ष्मी नाथ जी उ पाध्याय धारीपुर

श्री राम सनेही मास्टर धारीपुर

पं० रमाशंकर जो शुक्ल सखवट

सेठ श्री गुरु प्रसाद जी गुप्त बालवर गंज

श्री गंगा जी के पवित्र तट पोदरा (कलकत्ता) जहाँ पर श्री महाराज जी कई वर्ष चातुर्मास व्रत किए हैं, वहाँ के दान वीर, धर्म वीर भक्तों के नाम।

बाबू श्री शान्ता प्रसाद सिंह विलहरी वाले, परमहंस सदेव रोड कलकत्ता।

बाबू श्री प्रसिद्ध नारायण तिवारी (विलहरी वाले) पोदरा

श्री हरिहर प्रसाद सिंह जी पोदरा

बाबू प्रयाग नारायण जी पोदरा

श्री गोवर्धन बाबू पोदरा।

श्री सुधीर बाबू बंगाली

श्री राम यज्ञ पाण्डेय

श्री हनुमान जी का मन्दिर जोगेश्वरी बम्बई ६०

पं० विश्वनाथ तिवारी संकीर्तन मंडल माटुंगा बम्बई

श्री बाबू लाल गुप्ता विश्व-मित्र कार्यालय कानपुर।

बाबू विक्रम सिंह आटो मोबाईल्स अलीगढ़

पाठक गुप्ता कम्पनी पोदरा

दूबे एण्ड कम्पनी ब्रिक फील्ड पोदरा।

श्री लक्ष्मी ब्रिक फील्ड पाँच पाढ़ा।

श्री जगन्नाथ प्रसाद वेलतल्ला

बाबू श्री लक्ष्मी नारायण पाठक।

बाबू सत्यनारायण जायसवाल

श्री बद्री नारायण बाबू पोदरा

पं रामकुमार कलकत्ता।

पुरुषोत्तम दास जी चतुर्वेदी पथरिहट्टा कलकत्ता।

पं० पारस नाथ मिश्रा
गोरेगांव बम्बई

श्री ब्रजेश चन्द्र श्रीवास्तव
अहेरीपुर इटावा

श्री बिन्देश्वरी प्रसाद ड्राइवर
कानपुर

श्री बालकिशन एण्ड को०
फिरोजाबाद ।

श्री राम गोविन्द गनेड़ी वाला
श्याम बाजार कलकत्ता

श्री माता राज तिवारी पढ़ुवा

श्री महादेव सिंह ठाकुर
परतवाड़ा अमरावती ।

सेठ जी श्री राम दयाल जी
सोमांणी मधुसूदन ट्रस्ट बम्बई

पं० राम सहाय शर्मा चौकी
गेट फिरोजाबाद ।

पं० रामकरन जी मिश्र
नाभीपुर जौनपुर।

श्री रघुनाथ प्रसाद हरसुख
का नगला आगरा ।

श्री रामनारायण सिंह
आमासेल होशंगाबाद ।

श्री रूप किशोर जी शर्मा
ज्ञानी बाजार नई दिल्ली

श्री राधेश्याम पाण्डेय अध्या-
पक गजधर स्ट्रीट बम्बई ।

श्री राम नरेश जी चौबे
गोरेगांव बम्बई ।

श्री भगवान दास जी गाय
वाला फानस बाड़ी बम्बई ।

पं० मणी रामजी उपाध्याय
होलीपुरा आगरा

श्री मिजाजी लाल श्रीवास्तव
बिठौली आगरा

श्री सत्य प्रकाश सारस्वत
मदावली आगरा ।

श्री राम नारायण शर्मा
भरतपुर ।

ठा० रघुनाथ सिंह शहपुरा
भिटौनी जबलपुर

श्री रास बिहारी सिंह
रहेटुवा परसरामपुर प्रतापगढ़

पं० रमापति जी फलाहारी
वाराणसी ।

श्री राम जी श्री बास बैंक
आफ बड़ौदा कलकत्ता

स्वामी श्री रामविशाल जी
मिश्रा श्री राम भवन
इलाहाबाद ।

श्री राम लखन लाल वर्मा
गुल्लानपुर ।

पं० राम आधार दुबे
कालवा देवी रोड बम्बई २

पं० रामयश जी मिश्र
पीरामल नगर गोरेगांव
बम्बई

श्री राम मूर्ति शर्मा हाथरस

श्री रामचन्द्र सिंह अध्यापक
विले पारला बम्बई।

श्री राम प्रकाश जी कुलश्रेष्ठ
मम्फोड़गंज इलाहाबाद ।

श्री राजाराम जी तिवारी
बहोरनपुर साधूपुर गैंनपुरी ।

श्री शिव राम लाल श्रीवास्तव
शिवपुर हावड़ा ।

श्री सूर्य्य पाल शर्मा हाथरस
अलीगढ़

पं० सूर्य्य बली पाण्डेय
c/o राजा साहब गोपी लाल
वेंकट लाल वेंकटेश भवन
बम्बई ।

बाबू श्री सुरेशचन्द्र जी श्री
वास्तव, बाह आगरा ।

बाबू श्री राजेश्वर नाथ भार्गव
पियरलेस प्रेस इलाहाबाद ।

श्री राजमणि जी पाण्डेय
कारवार स्ट्रीट बम्बई ?

श्री राम बहादुर सिंह सान्ता
क्रुज बम्बई न० ५५

श्री राधेश्याम मिश्र प्रधान
टिकट बाबू गोरखपुर ।

सुश्री राममूर्ती देवी शर्मा
लोहा मंडी आगरा ।

पं० लालता प्रसाद जी पाण्डेय
ट्रान्सपोर्ट कारपोरेशन इन्दौर

श्रीमती सावित्री देवी शर्मा
आशा कुटीर इलाहाबाद ।

श्री शंकर दत्त शर्मा बरहन
आगरा ।

Scanned with CamScanner

श्री पं० शिव रामजी शर्मा
अछनेरा आगरा ।

श्री सम्पत कुमार जी एयर
पोर्ट बम्बई ।

स्वामी श्री सत्य प्रकाशानन्द
जी आनन्द कुटी जेवरा
मैनपुरी

श्री शिव दत्त शर्मा स्टोर
कोपर टेढ़ी पुलिया काठ
गोदाम

बाबू श्री हरिशंकर प्रताप
सिंह वकील कुण्डा प्रतापगढ़

श्री ओम पाल शर्मा हेयर
स्ट्रीट कलकत्ता ।

श्री ओंकार मल जी, हरेन
मुखर्जी रोड, बेलूर हावड़ा ।

श्री राजाराम जी पाण्डेय
कांदेवली बम्बई

श्री सीताराम पाण्डेय चकला
स्ट्रीट बम्बई ।

श्री ओंकार नाथ जी मिश्रा
सत्संग भवन बम्बई ।

भीलमपुर धर्म नगर संकीर्तन
मंडल

श्री कृपाशंकर लाल पढ़ुवा

श्री हरि प्रसाद मास्टर
अहारन आगरा ।

पं० हीरा राम मिश्र नाभी
पुर जौनपुर ।

श्री प्रकाशनन्द जी इटावा ।

श्री आर० जी० पाठक टिम्बर
ब्रोकर खण्डवा ।

श्री आनन्द प्रताप सिंह पटौदी
हाउस नई दिल्ली ।

श्री स्वामी शिवानन्द जी
महाराज सहसपुर मैनपुरी

श्री स्वामी रामानन्द जी
महाराज हरगेन पुर का
मन्दिर मैनपुरी ।

ठा० राज मंगल सिंह वैद्य
भोजे मऊ

श्री बंजरंग बाग घाटम पुर
संकीर्तन मंडल
गुवावाँ संकीर्तन मंडल ।

श्री नागेश्वर प्रसाद जी
द्विवेदी एम० पी०
७२ नार्थ एवन्यू-नई दिल्ली

श्री सीता राम जी मिश्र
(प्रधानाचार्य) स्वामी
कृष्णानन्द इन्टरमिडिएट
कालेज बिलवार-जौनपुर

पं० रामा नन्द तिवारी पुर
वाराणसी

पं० दया नन्द
गुवास वाराणसी

श्री राम चरित्र जादूगर
प्रेम का पूरा

श्री कृष्ण गोपाल
करछना, इलाहाबाद

श्री लल्लन प्रसाद
प्रेम का पूरा

श्री बजरंग बली बंशीवाले
प्रेम का पूरा

श्री पुरुषोत्तम तिवारी
हड़िया-इलाहाबाद

श्री श्याम बिहारी मिश्र
रायपुर-प्रतापगढ़

श्री राम अधार तिवारी
कोदई राम का पूरा

श्री गौरी शंकर महादेव

श्री प्रभुनाथ तिवारी
कोदई राम का पूरा

सुश्री राम रती देवी
c/o श्री नागेश्वर प्रसाद
द्विवेदी एम० पी०
प्रेम का पूरा

सुश्री इन्द्रवती देवी
मु० बादशाह पुर

सुश्री अभिलाषी देवी
c/o श्री नागेश्वर प्रसाद मिश्र
राम नगर-प्रतापगढ़

Scanned with CamScanner